Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पुस्तक भण्डार
चौक
कानपुर

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सुलभ देहाती नुस्खे

लेखक—

डा० सुरेशप्रसाद शर्मा

प्रथम संस्करण] १९६० [मूल्य १ रु० २५ न० पै०

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रकाशक

मेडिकल पुस्तक भवन,

गोला दीनानाथ, वाराणसी ।

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

मुद्रक —

रामनिधि त्रिपाठी

मायापति प्रेस, मध्यमेश्वर, वाराणसी ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्राक्कथन

भारतवर्ष की अधिकांश जनता ग्रामों में रहती है और धनाभाव के कारण शहरों में जाकर डाक्टर-वैद्य आदि चिकित्सकों की जेब पैसों से भर कर अपने रोगों को दूर करने में असमर्थ है। सच बात तो यह है कि चिकित्सा बहुत ही व्ययसाध्य हो चली है। जब कि अन्न-वस्त्र का संकट ही निरन्तर चल रहा है तब चिकित्सकों को रूपये लुटाने की सामर्थ्य किसमें है? गाँवों में जो भी चिकित्सक इन दिनों अपना डेरा डालते देखे जाते हैं इनकी योग्यता भी बहुत कम होती है। अतः उनसे चिकित्सा कराने में प्रायः ही जीवन-नाश की आशंका बनी रहती है।

प्रस्तुत पुस्तिका में कुछ ऐसे सुलभ नुस्खे लिखे गये हैं जिनके अनुसार दवा तैयार कर विविध रोगों से पिण्ड छुड़ाया जा सकता है। इन नुस्खों की विशेषता यह है, दवा तैयार करने में कोई विशेष खर्च नहीं है। प्रयास भी नहीं है। अतः हमारे विशाल देश के ग्रामीण भाई इस पुस्तिका की सहायता से अपने रोगों की चिकित्सा स्वयं करके स्वास्थ्य लाभ कर सकते हैं। ये नुस्खे महर्षियों के बनाये हुए हैं जो आयुर्वेद ग्रन्थों से संगृहीत हैं।

ज्वर छूट जाने पर उचित पथ्य देना चाहिये। वात ज्वर में रोटी का फुलका दाल और परवल का जूस हितकर पथ्य माना गया है। कफ-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ज्वर में मूँग की दाल के जूस के साथ रोटी देना चाहिये। पित्त ज्वर में भी मूँग का जूस ही देना उचित है। मसूर, चना, कुलथी और मूँग ही उत्तम है। इनका ही जूस बना कर देना चाहिये। इनके अलावा परवल, परवल की पत्ती, करैला, छोटी मूली पथ्य रूप में दे सकते हैं। गरम मसाले मिरचा न दें जूस में जीरा का प्रयोग कर सकते हैं। गोल मिर्च भी अल्प परिमाण में दी जा सकती है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

विषय सूची

विषय	पृष्ठ
ज्वर रोग	१
वात ज्वर	३
जीर्ण ज्वर	४
कफ ज्वर	,,
पित्त ज्वर	५
विषम ज्वर	,,
वातकफ ज्वर	६
पित्तकफ ज्वर	,,
शीतज्वर, बारी का ज्वर	७
तिजारी चौथिया ज्वर	८
पुराना ज्वर	,,
विविध ज्वर	१०
अतिसार, ज्वरातिसार	११
कास (खाँसी)	१४
श्वास (दमा)	१६
स्वर भेद	१८
अरुचि रोग	१६
वमन रोग	,,
दाह रोग	२०
उन्माद रोग	२१
मूर्च्छा रोग	२२
मृगी रोग	२३
वात रोग	,,
रक्तपित्त	२८
आमवात	२६
वातरक्त	३१
अम्लपित्त अम्लशूल	३२
शूल रोग	३३
विशूचिका (हैजा)	३४
पेट के रोग	३६
यकृत-प्लीहा	४०
गुल्म रोग	४२
हृद् रोग	४३
शोथ और फोड़ा	४४
श्लीपद रोग	४५
मूत्र कृच्छ्र रोग	४७
मूत्रावात	४६
अश्मरी	५०
प्रमेह रोग	५१
सूजाक रोग	५३
बहुमूत्र रोग	५४

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
उपदंश (गरमी)	५५	कानों के रोग	७६
कंठमाला	,,	मुख रोग	७८
व्रण रोग	५७	दाँत का रोग	७६
अण्डकोश-वृद्धि	५६	स्त्री रोग	८०
कुष्ठ रोग	५६	बाल रोग	८३
भगन्दर (बवासीर)	६२	कट जाना	८४
पाण्डु (कामला)	,,	जल जाना	८४
कृमि रोग	६५	लू लगना	८४
क्षय-राजयक्ष्मा	६६	जूँ या लीक	८५
शीतला	६७	बाल पकना	८५
जलोदर रोग	६८	खुजली दाद	८५
नाक के रोग	६६	बेवाई फटना	८५
सिर के रोग	७०	हिक्का रोग	८६
नेत्र रोग	७२	नपुंसकता	८६

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सुलभ देहाती नुस्खे

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ज्वर-रोग

नये ज्वर में दिवा-निद्रा, स्नान, तेल लगाना, स्त्री-सम्भोग, श्रमजनक कर्म और कड़वी दवाओं का सेवन निषेध है।

भोजन करना छोड़ देना चाहिये। अधिक वायु का सेवन न करना चाहिये। उपवास करने से उपकार होता है। परन्तु बालकों, वृद्धों, गर्भिणी स्त्रियों और दुर्बल व्यक्तियों को उपवास करना उचित नहीं है। उपवास में सामर्थ्य और अवस्था का विचार करना चाहिये। सतर्कता के साथ इसका निर्णय कर लेना होता है।

ज्वर में प्यास—जल गरम करके मिट्टी के बरतन में रख देना चाहिये। शीतल होने पर पिलाना चाहिये।

प्यास का वेग प्रबल हो तो मोथा, श्वेतपापड़ा, लाल चन्दन, बाला, सोंठ, चार सेर जल में औंटाकर दो सेर शेष रहे तो उतारकर रख दें। यही जल पिलाने से रोगी की प्यास मिटती है।

ज्वर में दाह या जलन—रोगी के दाह या जलन में—धनियाँ दो तोला बारह तोला जल में रात को भिगो दें, प्रातःकाल उस जल में चीनी मिलाकर रोगी को पिलाइये। इससे प्रबल अन्तर्दाह नष्ट होता है।

एक तोला पद्म मधु आधा सेर शीतल जल में मिलाकर रोगी को पिलाने से प्यास मिटती है।

सौंफ कुचलकर पथरी में या काँच के बरतन में भिगो दें। कुछ घंटे बाद जल छानकर कुछ मधु के साथ रोगी को पिलाइये।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पित्त ज्वर के रोगी को चित् लेटाकर नाभिस्थल पर काँसे का बरतन रखकर उस पात्र के ऊपर शीतल जल की धार छोड़ने से शीघ्र ही दाह नष्ट होता है।

पलाश वृक्ष की कोमल पत्तियों को काँजी के साथ पीसकर दाह के स्थान पर प्रलेप देना चाहिये।

बेर या नीम की नरम पत्तियाँ काँजी के साथ मलकर उसका फेन रोगी के शरीर पर मलने से दाह शान्त होता है।

काँजी में एक टुकड़ा कपड़ा भिगोकर उसी से सर्वाङ्ग ढक रखने से दाहनाश होता है। दाह प्रबल रहे तो नीम की पत्तियाँ लाकर बिछौने पर बिछा दें। उसके ऊपर रोगी को लिटा दें। इससे विशेष उपकार होगा।

एक तोला सौंफ और एक तोला धनियाँ कुचलकर एक साफ कपड़े में पोटली बाँधकर ठंढे जल में भिगो दें। वही जल छानकर रोगी को पिलाइये।

मुख में दुर्गन्ध—गोलमिर्च, पीपल, सोंठ इन्हें लाकर चूर्ण तैयार करें। बारीक चूर्ण तैयार हो जाने पर उसमें से थोड़ा-सा लेकर मुँह में रख लें और गरम जल से कुल्ला करें। इससे मुँह की दुर्गन्ध मिट जायगी।

अदरख का रस गरम जल में मिलाकर उससे कुल्ला करने से मुँह की दुर्गन्ध दूर होती है।

सिरदर्द—लवंग, दालचीनी, नारियल फूल जल के साथ पीसकर ललाट के दोनों तरफ प्रलेप देने से सिरदर्द दूर होता है।

पुराने घी के साथ सोंठ का चूर्ण मिलाकर ललाट के दोनों तरफ कनपटियों में प्रलेप देने से सिरदर्द मिटता है।

दालचीनी अच्छी तरह पीसकर ललाट के दोनों तरफ प्रलेप देने से तुरन्त सिरदर्द दूर होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

स्याह जीरा—पीस कर ललाट के दोनों तरफ प्रलेप देने से सिर दर्द में यथेष्ट उपकार होता है।

पसीना—रोगी के सर्वांग में अबीर मलने से पसीना दूर होता है।

वमन—स्तन के दूध के साथ मोर की पूँछ का भस्म पीस डालें। उसे अच्छी तरह मिला कर रोगी को सेवन कराइये। इससे ज्वर काल का वमन दूर होता है।

स्तन के दूध के साथ एक तोला काली तिल अच्छी तरह पीस कर, फिर स्तन-दूध में मिला कर पिलाने से वमन शान्त होता है।

वात ज्वर

१—अनन्त मूल, विल्वपत्र, किशमिश, पीपल, गुरुच, समान भागों में लेकर सब समेत दो तोला रख लें। इसके बाद आधा सेर जल में इन्हें औंटा कर काढ़ा तैयार करें। आधा पाव शेप रहे तो उतार दें। जरा गरम रहते ही इसमें थोड़ा मधु मिला कर पिलाइये। वात ज्वर का नाश हो जायगा।

२—आँवला, बहेड़ा, हरड़ समान भागों में लेकर सब समेत दो तोला रख लें। इसके बाद आधा सेर जल में इन्हें औंट डालें। आधा पाव शेप रहे तो उतार दें। जरा गरम रहते ही दो तोला अदरख का रस उसमें मिलाकर रोगी को पिलाइये। यह दवा वात ज्वर को नष्ट करती है।

३—गुरुच, शतमूली समान परिमाण में लेकर जल के बिना ही कूट-कुचल कर रस निकालिये। यह रस दो तोला लेकर चार आना ईख का गुड़ मिलाकर सेवन करने से वात-ज्वर नष्ट होता है।

४—किशमिश, अनन्तमूल, पुनर्नवा, गुरुच, सम परिमाण में लेकर सब समेत दो तोला रख लें फिर इसे आधा सेर जल में औंट कर आध

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पाव शेष रहे तो उतार दें, जरा गरम रहते ही ईख का गुड़ मिलाकर रोगी को पिलाइये। यह वात-ज्वर को नष्ट करने वाली दवा है।

जीर्ण-ज्वर

१—रविवार को लाल गेंदा और पुनर्नवा का फूल छेद कर एक भाग की मात्रा में लेकर उसमें ढाई गोल मिर्च मिलाकर सेवन करें। बाद को ठंढा जल पी जायँ। इस तरह सेवन करने से जीर्ण ज्वर कम्प ज्वर नष्ट होता है।

२—मुलहठी ६ माशे और ६ माशे कुटकी मिलाकर काढ़ा तैयार कर रोगी को पिलाने से जीर्ण ज्वर छूट जाता है।

३—६ माशे की मात्रा में पित्त पापड़ा का काढ़ा तैयार कर उसमें तीन माशे धनियां मिलाकर प्रातःकाल, सायंकाल देने से जीर्ण ज्वर नष्ट होता है।

४—गुड़ दो आना, पीपल का चूर्ण एक भाग मिलाकर आधा-आधा तोला मात्रा की गोली बना कर खाने से जीर्ण ज्वर दूर होता है।

५—हरसिंगार की पत्तियों का रस ६ माशे की मात्रा में लेकर उसमें मधु मिलाकर पीने से जीर्णज्वर का नाश होता है।

कफ-ज्वर

१—पीपल का चूर्ण और कायफल समान भागों में लेकर मधु के साथ चाटने से कफ-ज्वर का नाश होता है।

२—पीपल, गज पिप्पली, नीम की छाल, कण्टकारी, गुरुच, चिरायता, सोंठ, इन्हें सम परिमाण में सब समेत दो तोला लेकर आधा सेर जल में औंट डालें। आधा पाव शेष रहे तो उतार कर चार आने परिमाण में गोल मिर्च का चूर्ण मिलाकर पिलाने से कफ ज्वर नष्ट होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

२—कुटकी, इन्द्रयव, फालसा, मोथा, बहेड़ा, हरीतकी, आँवला समान भागों में लेकर कुल दो तोला रख कर आधा सेर जल में औंट डालिये। आध पाव शेष रहे तो उतार कर जरा गरम रहते ही रोगी को पिलाइये। इससे कफ-ज्वर नष्ट होगा।

पित्त-ज्वर

कुटकी, किशमिश, मुलेठी, नीम की छाल समान भागों में लेकर, सब समेत दो तोला आधा सेर जल में औंटाना चाहिये। आधा, पाव शेष रहे तो उतार कर सेवन करें।

इससे कोठा साफ होता है। पित्तज्वर नष्ट होता है।

विषम ज्वर

१—पीपल का चूर्ण एक आना वजन में लेकर कुछ मधु के साथ मिलाइये। प्रातःकाल और सायंकाल चाटने को दें। विषम ज्वर में अच्छा फल होता है।

२—गोलमिर्च और लहसुन समान भागों में लेकर एक साथ पीसना चाहिये। इसका नस्य लेने से विषम ज्वर में विशेष उपकार होता है।

३—चिरायता, इन्द्रयव, गजपीपल, मोथा, धनियाँ, दशमूल, देवदारु, कुटकी, समान परिमाण में लेकर कुल दो तोला रख लें। आधा सेर जल में औंट डालें। आधा पाव शेष रहे तो उतार कर गरम रहते ही पिलाइये। विषम ज्वर छूट जायगा।

४—सोंठ, मोथा, गुरुच, चिरायता, दशमूल समान भागों में लेकर सब समेत दो तोला रख लें और आधा सेर जल में औंट कर जब आध पाव शेष रहे तो उतार कर रोगी को पिलाइये। विशेष उपकार होगा।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

५—सहदेवी दो तोला लेकर काढ़ा पका कर उसमें तीन माशे सोंठ का चूर्ण मिला दें। यही रोगी को पिलाइये। इससे विपम ज्वर छूट जायगा।

६—पीपल, छोटी हरें, चिरायता का चूर्ण मिला कर सारी रात पानी में भिगो दें। सवेरे मल कर छान कर सेवन करें। विपम ज्वर छूट जायगा।

वात-कफ-ज्वर

१—पीपल एक तोला, आधा सेर जल में औंट कर आधा पाव शेप रहने पर उतार कर रोगी को पिलाइये। वात-कफ-ज्वर में लाभ होगा।

२—किसी नयी हाँड़ी में वालू भर कर रख दें, फिर उसके ऊपर काँजी छिड़क कर सींच डालें। एक सेर वालू की एक पोटली वाँधकर तैयार कर लें। इस पोटली से सेंक देने से वात-कफ ज्वर में विशेप उपकार होता है। यही नहीं, शरीर का दर्द भी मिट जाता है।

३—सोंठ, पीपलमूल, चित्तामूल, पीपल-इनको समान भागों में लेकर सब समेत दो तोला रख लें, फिर इसे आधा सेर जल में औंटकर आध पाव शेप रहे तो उतार लें। इस दवा का सेवन करने से वात-कफ ज्वर का नाश होता है।

पित्त-कफ ज्वर

१—इन्द्रयव, सोंठ, कुटकी, पलता, मोथा, रक्तचन्दन, गुरुच, समान भागों में लेकर कुल दो तोला रख लें। आधा सेर जल में औंट डालें। आधा पाव शेप रहे तो उतार कर सेवन करें। पित्त-कफ ज्वर का नाश होगा।

२—एक तोला चीनी, एक तोला कुटकी इन दोनों चीजों का जल के साथ सेवन करें। पित्त कफ-ज्वर नष्ट होगा।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

शीत ज्वर, बारी का ज्वर

१—गोलमिर्च, करंज का गूदा समान मात्रा में लेकर पीस डालें। एक-एक माशे की गोलियाँ बनावें। ज्वर आने के पहले एक-एक गोली खिलाने से शीत ज्वर रुक जाता है।

२—करंज की जड़ का काढ़ा छः माशा देने से जाड़ा देकर आने-वाला ज्वर नष्ट होता है।

३—मँदार की जड़ की छाल दो रत्ती पान के साथ खाने से बारी से आने वाला ज्वर नष्ट होता है।

४—मँदार की पीली पत्तियाँ आग में जला कर भस्म कर लें और मधु के साथ आधा माशा सेवन करें। शीत ज्वर के लिए यह दवा अचूक है।

५—सोंठ और पीपल समान भागों में लेकर चूर्ण कर गुरुच के काढ़े में मिलाकर सेवन करने से बारी से आने वाला ज्वर नष्ट होता है।

६—दारु हलदी की जड़ की छाल का काढ़ा पकाकर पीने से बारी का ज्वर छूट जाता है।

७—दारु हलदी की जड़ की छाल का चूर्ण मधु के साथ सेवन करने से बारी का ज्वर दूर होता है।

८—दुद्धा की जड़ कान में बाँधने से निश्चित समय पर आने वाला ज्वर नष्ट होता है।

९—धतूरे के बीज का रस ४ रत्ती लेकर पान के साथ खिला देने से शीत ज्वर का नाश हो जाता है।

१०—धतूरे की जड़ रविवार को उखाड़ कर दायें हाथ में बाँधने से बारी का ज्वर चला जाता है।

११—नीम की छाल ५ माशे की मात्रा में लेकर काढ़ा पकाकर पिलाने से बारी का ज्वर नष्ट होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

१२—नीम की कोमल पत्तियाँ ४ माशा की मात्रा में लेकर उसमें २१ गोलमिर्च मिलाकर पीस कर गोलियाँ तैयार कर ज्वर आने के एक घंटा पूर्व खिला देने से शीत ज्वर का नाश हो जाता है।

१३—नौसादर का चूर्ण तीन रत्ती और तीन काली मिर्च पान में खाने से ज्वर का कोप दूर हो जाता है।

तिजारी-चौथिया ज्वर

१—आधा तोला पुनर्नवा की जड़ का चूर्ण दूध के साथ सेवन करने से पित्त से उत्पन्न चौथिया ज्वर नष्ट होता है।

२—श्वेत अपराजिता की जड़ रविवार को उखाड़ कर लाल डोरे में लपेट कर कण्ठ में बाँधने से तिजारी ज्वर का नाश होता है।

३—पुष्य नक्षत्र में बरिआरा की जड़ उखाड़ कर हाथ में बाँधने से चौथिया ज्वर नष्ट होता है।

४—मुंडी का चूर्ण ६ माशे खाकर बकरी का दूध पीने से तिजारी ज्वर का नाश होता है।

५—भँगरैया की जड़ पुष्य नक्षत्र में उखाड़कर गंगा जल में धोकर हाथ में बाँध रखने से चौथिया ज्वर का नाश होता है।

६—मकोय की जड़ रविवार को उखाड़ कर कान में बाँध रखने से रात्रि में आने वाला ज्वर छूट जाता है।

पुराना ज्वर

१—आधा तोला पुराने गुड़ के साथ आधा तोला पीपल-चूर्ण मिलाकर सेवन करने से थोड़े ही दिनों में पुराना ज्वर, विषम ज्वर दूर हो जाते हैं।

२—गोलमिर्च, नीम की पत्तियाँ, काली तुलसी की पत्तियाँ, करैली की पत्तियाँ समान भागों में लेकर मल कर पीस डालें। चने के बराबर

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

गोलियाँ तैयार करें। प्रतिदिन प्रातःकाल एक-एक वटी सेवन करने से पुराने ज्वर का नाश होता है।

३—नीम की छाल, गुरुच, चिरायता, श्वेतपापड़ा समान परिमाण में लेकर आधा सेर जल में औटिये। आध पाव शेष रहे तो उतार कर सेवन करें। इससे पुराना ज्वर दूर होता है।

४—प्रति दिन दो तोला की मात्रा में श्वेत पापड़ा का रस लेकर किंचित् मधु के साथ सेवन करने से पुराने ज्वर में विशेष उपकार होता है।

५—पीपल, गुरुच, चिरायता, समान भागों में लेकर चूर्ण तैयार करें। दो आने से चार आने की मात्रा में रोगी की उम्र के विचार से सेवन करायें। पुराने ज्वर के लिए यह अचूक दवा है।

६—शेफालिका पत्ती का रस प्रति दिन किंचित् मधु के साथ सेवन करने से पुराना ज्वर नष्ट हो जाता है।

पुराने ज्वर में पसीना—मधु के साथ रुद्राक्ष घिस कर अल्प मात्रा में बारबार सेवन करने से पसीना दूर होता है।

पुराने ज्वर में वमन—एक बड़ी इलायची लेकर उसके चारो तरफ गोबर का लेप कर दें। तब उसे आग में जला दें। जल जाने पर उसका चूर्ण तैयार करें। किंचित् मधु के साथ इसका सेवन करने से वमन की शिकायत दूर होती है।

पुराने ज्वर में प्यास—पहले जल औंटकर उसे ठंडा करें। फिर श्वेत चंदन अल्प मात्रा में घिसकर उसमें मिला दें। उसी जल में सौंफ की एक पोटली छोड़ दें। रोगी को प्यास से कष्ट होने लगे तो वही पोटली निचोड़-निचोड़ कर थोड़ा-थोड़ा पिलाइये।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

विविध ज्वर

अँतरिया अर्थात् एक दिन अन्तर पर आने वाले ज्वर को दूर करने के लिए एक टोटका यह है—

एक सफ़ेद सूत से उल्लू का दायाँ पंख बाँधकर रोगी के बायें कान में बाँध दें। इससे एक दिन के अन्तर में आने वाला ज्वर रुक जाता है।

दूसरा टोटका—कॉकड़े के गढ़े की मिट्टी लाकर रोगी के ललाट पर टीका लगा दें। अँतरिया ज्वर दूर हो जायगा।

तीसरा टोटका—श्वेत जयन्ती की जड़ सिर पर बाँध रखने से विषम ज्वर दूर होता है।

बबूल की पत्तियों का रस जल के बिना निकालें। इस रस का नस्य लेने से चौथिया ज्वर नष्ट हो जायगा।

टोटका—यदि रविवार को ज्वर आने की बारी हो तो श्वेत रंग की गाय के दूध के साथ किंचित् शोधित हरिताल भस्म सेवन करने से चौथिया ज्वर नष्ट होता है।

टोटका—काकमाची नामक वृक्ष की जड़ कान में बाँधने से रात को आने वाला ज्वर दूर होता है।

श्वेत अपराजिता का रस नाक में नस्य की भाँति सूँघने या खींचने से बारी का ज्वर दूर होता है। पुष्य नक्षत्र में आपांग की जड़ उखाड़ कर लाल रंग के डोरों से जो संख्या में सात हों, रविवार को कमर में बाँध रखने से तिजारी ज्वर रुक जाता है।

टोटका—कान की मैल से बत्ती बनाकर तिल के तेल में जला डालें उससे आँजन तैयार कर दोनों आँखों में लगाने से तिजारी ज्वर दूर होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अतिसार, ज्वरातिसार

१—धनियाँ, यव (जौ) परवल की पत्ती—इन तीनों को सम परिमाण में लेकर सब समेत दो तोला लेकर आधा सेर जल में औंट डालें। काढ़ा पक कर जब आध पाव शेष रहे तो उतार लें। इसे सेवन करने से अतिसार रोग नष्ट होता है।

२—इन्द्रयव, मोथा, सोंठ इन्हें सम परिमाण में लेकर सब समेत दो तोला रख लें। आधा सेर जल में औंट कर काढ़ा तैयार करें। जब आधा पाव शेष रहे तो उतार कर सेवन करें। इससे ज्वरातिसार दूर होता है।

३—आँवला, जामुन और आम की पत्तियों का रस निकालें। तीनों प्रकार का रस समान भागों में लें और सब मिलाकर दो तोला रख लें। अल्प मात्रा में मधु उसमें मिलाकर सेवन करने से रक्तातिसार दूर होता है।

४—बबूल वृक्ष की कोमल पत्तियों का रस एक तोला प्रतिदिन सेवन करने से अतिसार रोग दूर होता है।

५—आम वृक्ष का वल्कल जल या कांजी के साथ पीस कर नाभि की जड़ में प्रलेप देने से पेट की वेदना आदि उपसर्ग दूर होते हैं और अतिसार भी नष्ट होता है।

६—लंवग-चूर्ण, जायफल-चूर्ण, सोहागा के लावे का चूर्ण और जीरा का चूर्ण सम परिमाण में लेकर मिला दें। प्रतिदिन प्रातःकाल आधा तोला लेकर उसमें किंचित् मधु और चीनी मिलाकर सेवन करें। यह अतिसार में विशेष लाभ देता है।

७—मोथा का रस एक छटाँक और मधु एक तोला मिलाकर सेवन करने से अतिसार आरोग्य होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

८—दो तोला इन्द्रयव आधा सेर जल में औंट कर जब आध पाव शेष रहे तब उतार कर सेवन करें। यह अतिसार की उत्तम औषधि है।

९—एक तोला धनियाँ और सोंठ उतनी ही मात्रा में लेकर आधा सेर जल में काढ़ा तैयार करें। दो छटाँक शेष रहे तो उतार कर सेवन करें। इससे ज्वरातिसार दूर होता है।

१०—गोल मिर्च, सज्जी मिट्टी आठ आने की मात्रा में और कपूर चार आने की मात्रा में लेकर शीतल जल के साथ सेवन करने से अतिसार जनित पेट दर्द आरोग्य होता है।

११—सोंठ, धनियाँ, बेलगिरि, नागरमोथा, अतीस, सुगन्धबाला इन्हें मिलाकर दो तोला लेकर आधा सेर जल में रख कर मिट्टी के बरतन में काढ़ा तैयार करें। जब एक छटाँक शेष रहे तो उतार कर सेवन करें। इससे शूल और आमातिसार का नाश होता है।

१२—धनियाँ सोंठ एक तोला लेकर काढ़ा पकाइये। आधा सेर जल में औंटना चाहिये। १ छटाँक शेष रहे तो उतार कर सेवन करें। ज्वरातिसार की यह अति उत्तम दवा है।

१३—अजवायन भून कर अर्क निकाल कर सेवन करने से आमातिसार का नाश होता है।

१४—अशोक का फूल छः माशे की मात्रा में लेकर पीस डालें। रोगी को पिला दें। इससे रक्तातिसार का नाश होगा।

१५—चिरायता छः माशे लेकर काढ़ा तैयार करें। १ छटाँक शेष रहे तो उतार बेल के गूदे का चूर्ण ६ माशे उसमें मिलाकर सेवन करने से अतिसार दूर होता है।

१६—सेंधा नमक के साथ जीरा का चूर्ण मिलाकर दही में मिला कर खाने से आमातिसार का नाश होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

१७—ढाक की छाल का एक तोला ताजा रस पीने से अतिसार का कष्ट दूर होता है।

१८—तिल का चूर्ण ६ माशे बकरी के दूध में मिलाकर सेवन करने से रक्तातिसार का नाश होता है।

१९—छोटी दुधिया की पत्तियों का चूर्ण ९ माशे की मात्रा में लेकर खिलाने से शिशु का अतिसार दूर होता है।

२०—इन्द्रयव का चूर्ण एक रत्ती की मात्रा में खिलाने से शिशु का अतिसार दूर होता है।

२१—थूहर की जड़ लाल सूत से कमर में बाँध रखने से अतिसार रोग का नाश होता है।

२२—धनियाँ भून कर चूर्ण तैयार करें। वही चूर्ण शक्कर के साथ खिलाने से बच्चे का अतिसार दूर होता है।

२३—गाय के मक्खन में मिश्री-मधु मिलाकर खाने से अतिसार का नाश होता है।

२४—मेथी का साग भूनकर सेवन करना आमातिसार की उत्तम दवा है।

२५—सेमल की गोंद का चूर्ण छः माशे लेकर मधु के साथ चाटने से रक्तातिसार का नाश होता है।

२६—छः माशे अदरख के साथ एक तोला मोथा पीसकर मधु के साथ सेवन करने से आमातिसार का नाश होता है।

२७—साबूदाना के साथ मक्खन चाटने से शिशु का अतिसार दूर होता है।

२८—लवंग और बहेड़े की छाल पीसकर मधु के साथ चाटने से अतिसार दूर होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

२१—कच्चा पपीता उबाल कर सेवन करने से पुराने अतिसार से मुक्ति मिलती है।

कास (खाँसी)

१—जल न मिलाकर अदरख का रस एक छटाँक निकाल कर अल्प मधु के साथ सेवन करने से खाँसी दूर होती है।

२—आँवला की पत्तियों का चूर्ण चीनी के साथ खाने से पुरानी खाँसी दूर होती है।

३—पान की पोटली कडुआ तेल से चुपड़ कर आग पर सेंक कर बच्चे की छाती पर बाँध रखने से खाँसी के कष्ट से उसे मुक्ति मिलती है।

४—चिलम पर पीपल तम्बाकू की तरह चढ़ा कर पीने से खाँसी नष्ट होती है।

५—बादाम की मींगी मिश्री के साथ पीस कर पीने से खाँसी दूर होती है।

६—बहेड़े की छाल घी में भून कर सेवन करने से सब प्रकार की खाँसी नष्ट होती है।

७—ब्राह्मी की पत्तियों का रस पीने से खाँसी का नाश होता है।

८—गोल मिर्च का चूर्ण मधु में मिलाकर चाटने से खाँसी की शिकायत नहीं रहती।

९—मोथा, हरिताल, मुलहटी, मनःशिला, जटामांसी कूट कर नयी चिलम पर तमाखू की तरह चढ़ाकर पीने से एवं गाय का दूध पीने से खाँसी का रोग नष्ट होता है।

१०—लहसुन घी में भूनकर सेवन करने से खाँसी नष्ट होती है।

११—सरसों पीस कर मधु के साथ खाने से खाँसी का नाश होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

१२–सफेद धतूरे का फूल धूप में सुखाकर चूर्ण तैयार करें। इस चूर्ण को कागज में लपेट कर चुरूट तैयार करें। इस चुरूट का धूम्र पान करने से कास-श्वास रोग में उपकार होता है।

१३–अदरख के रस के साथ उचित मात्रा में मधु मिलाकर चाटने से खाँसी में उपकार होता है।

१४–धतूरे के फल, पत्ते और डाली सुखाकर चूर्ण तैयार करें और इस चूर्ण को तम्बाकू की तरह पीने से खाँसी अच्छी हो जाती है।

१५–भुनी हुई हलदी का चूर्ण सेवन करने से खाँसी में लाभ होता है।

१६–मिश्री, काली मिर्च, मुलहठी एक में मिलाकर गोली तैयार करें। मुँह में रख कर चूसें, खाँसी दूर होगी।

१७—वंशलोचन और अदरख का रस मधु के साथ सेवन करने से खाँसी का नाश होता है।

१८—मिश्री के चूर्ण के साथ आँवला का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से सूखी खाँसी दूर होती है।

१९—मँदार की चार-पाँच पत्तियों को जला कर उसकी राख पानी में रात भर के लिए छोड़ दें। प्रातःकाल छान कर पी जायँ। खाँसी दूर हो जायगी।

२०—अदरख के रस के साथ कुलंजन सेवन करने से खाँसी नष्ट होती है।

२१—भुनी हलदी का चूर्ण मिश्री के चूर्ण के साथ सेवन करने से सूखी खाँसी नष्ट होती है।

२२—तिल के तेल में कपूर मिला कर बच्चे की छाती पर मलने से खाँसी रोग में उपकार होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

२३—तीन माशे सेंधा नमक लेकर उसमें गेहूँ का चूर्ण मिला दें। इसे आधा सेर पानी में औंट डालें। जब चौथाई भाग शेष रहे तो छान कर पीयें। यह दवा खाँसी दूर करने के लिए उत्तम है।

२४—चम्पा की छाल का चूर्ण छः माशे की मात्रा में लेकर पीने से सूखी खाँसी नष्ट होती है।

२५—शतावर, मिश्री, छुहारा लेकर काढ़ा पकायें। आध पाव शेष रहे तो सेवन करें। पुरानी खाँसी में यह दवा बहुत उपकार करती है।

२६—तिल के काढ़े में मिश्री मिलाकर पीने से पुरानी खाँसी नष्ट होती है।

२७—तेजपात और पीपल का चूर्ण मधु के साथ सेवन करने से खाँसी दूर होती है।

२८—परवल की पत्तियां का काढ़ा तैयार कर पीने से कफ ढीला होकर बाहर निकलता है।

२९—सेंधा नमक दो माशे, पीपल का चूर्ण दो माशे, अदरख का रस एक तोला एक में मिलाकर सेवन करने से खाँसी शान्त होती है।

श्वास (दमा)

१—हलदी, मिर्च, किशमिश, पुराना गुड़, रास्ना, पीपल और शठी समान भागों में लेकर चूर्ण तैयार करें। सब एक में मिला दें। चार आने की मात्रा में अल्प तिल-तैल के साथ सेवन करने से प्रबल श्वास रोग का दमन होता है।

२—हरीतकी कूटकर तम्बाकू की तरह चिलम पर चढ़ाकर धूम्रपान करने से श्वास रोग नष्ट होता है।

३—सूखी मूली का काढ़ा सेवन करने से श्वास रोग नष्ट होता है।

४—सहिंजन के रस में अदरख का रस मिलाकर सेवन करने से श्वास रोग का नाश होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

५—गोलमिर्च और जवाखार एक में मिलाकर मधु के साथ चाटने से श्वास रोग दूर होता है।

६—तालसी-पत्र हलदी के साथ मिलाकर चिलम पर तम्बाकू की तरह चढ़ा कर धूम्रपान करने से श्वास-रोग नष्ट होता है।

७—छुहारे का चूर्ण सोंठ के चूर्ण के साथ मिलाकर पान के बीड़े में रखकर चूसने से श्वास-रोग दूर होता है।

८—सरसों का तेल और गुड़ दो तोला की मात्रा में सेवन करने से श्वास-रोग दूर होता है।

९—आम की पत्तियों को सुखा कर चिलम पर चढ़ाकर तम्बाकू की तरह धूम्रपान करने से श्वास-रोग दूर होता है।

१०—आधा तोला इसबगोल प्रतिदिन कुछ समय तक सेवन करने से श्वास-रोग दूर होता है।

११—नीम का तेल चार आने भर पीकर पान खाने से श्वास-रोग नष्ट होता है।

१२—मिश्री के चूर्ण के साथ भुनी फिटकिरी मिलाकर विधिवत् सेवन करने से श्वास-रोग नष्ट होता है।

१३—गाय के घी में बच भूनकर दो आने की मात्रा में सेवन करने से श्वास-रोग नष्ट होता है।

१४—हरीतकी, और बहेड़ा लाकर चूर्ण तैयार करें। आधा तोला की मात्रा में सेवन करें। श्वास-रोग को नष्ट करेगा।

१५—बेर की पत्तियों को पीसकर घी में भूनकर सेंधा नमक के साथ सेवन करने से श्वास-रोग नष्ट होता है।

१६—धतूरे का पौधा छाया में सुखाकर उसे कूटकर चिलभ पर तम्बाकू की तरह पीने से श्वास-रोग का दमन होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

१७—मदार की पत्तियों का खार सेवन करने से दमा में उपकार होता है।

१८—तुलसी की पत्तियों के रस में मधु मिलाकर बच्चे को पिलाने से उसका दमा छूट जाता है।

१९—पहले धतूरे की जड़ सुखाकर चिलमपर धूम्रपान करने से दमा रोग नष्ट होता है।

२०—रेंड़ी के बीज और बहेड़े के बीज का चूर्ण बना, एक में मिलाकर खाने से दमा रोग दूर होता है।

२१—भारंगी का चूर्ण और सोंठ गर्म जल के साथ सेवन करने से दमा रोग नष्ट होता है। काढ़ा पका कर भी पीना लाभदायक होता है।

२२ - हलदी का चूर्ण १ माशा पुनर्नवा का चूर्ण चार आने भर मिलाकर सेवन करने से दमा-रोग का दमन होता है।

स्वर-भेद

१—हरीतकी और पीपल का चूर्ण अथवा हरीतकी और सोंठ का चूर्ण मुँह में रखकर धीरे-धीरे रस चूसने से स्वर भेद में उपकार होता है।

२—बेर की पत्तियों को सेंधा नमक के साथ पीसकर उसे घी में भूनकर चाटने से स्वर-भेद रोग दूर होता है।

३—सोंठ, मिर्च, पिपरामूल, पीपल इन सबका चूर्ण गोमूत्र के साथ सेवन करने से स्वर-भेद रोग नष्ट हो जाता है।

४—शंखपुष्पी, ब्राह्मी और बच का सेवन करने से स्वर-भेद रोग नष्ट हो जाता है।

५—स्वरभेद रोग में कुलंजन और मुलेठी सेवन करना लाभकारी है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

६—अजमोद, आँवला, जवाखार, हलदी, चीत की जड़ का चूर्ण घी और मधु में मिलाकर सेवन करने से स्वरभेद-रोग नष्ट होता है। घी और मधु समान मात्रा में न रहे।

अरुचि-रोग

१—प्रतिदिन दिन के भोजन के पहले अदरख और सेंधा नमक एक साथ खाने से भोजन में रुचि बढ़ती है, अग्नि तेज होती है, गले का संस्कार होता है।

२—विड़ नमक, शहद, अनार का रस एक में मिलाकर सेवन करने से अरुचि रोग दूर होता है।

३—दारु-हलदी, अजवाइन और दालचीनी सम मात्रा में लेकर चूर्ण तैयार करें। यह चूर्ण नित्य सेवन करने से अरुचि दूर होती है।

४—नागरमोथा और दालचीनी सेवन करने से अरुचि दूर होती है।

५—धनियाँ और छोटी इलायची का चूर्ण तैयार कर सेवन करने से अरुचि रोग का नाश होता है।

६—पुरानी इमली और गुड़ के जल में दालचीनी, इलायची और मिर्च का चूर्ण मिलाकर कुल्ला करने से अरुचि में विशेष उपकार होता है।

७—नागरमोथा और दालचीनी सेवन करने से अरुचि दूर होती है।

वमन-रोग

१—पीपल (अश्वत्थ) वृक्ष की सूखी छाल जला कर शीतल जल में डाल कर पुनः पुनः पीने से वमन आरोग्य होता है।

२—कण्टकारी पीस कर सुरा के साथ मिलाकर सेवन करने से वमन रोग दूर होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

३—चावल के धोवन में धनियाँ का चूर्ण और मिश्री मिलाकर पीने से गर्भवती स्त्री का वमन शान्त होता है।

४—सफेद दूब (घास) का रस पीने से पित्तजनित वमन दूर होता है।

५—इलायची के छिलके का भस्म मधु में मिलाकर चाटने से वमन शान्त होता है।

६—गूलर की छाल गरम जल के साथ सेवन करने से वमन का कष्ट दूर होता है।

७—सेंधा नमक, धान का लावा, पीपल, बिजौरे का बीज इन सबका चूर्ण समान भागों में लेकर मधु के साथ चाटने से वमन-रोग का निवारण होता है।

८—लवंग और दालचीनी का काढ़ा पीने से वमन रुक जाता है।

९—बरगद वृक्ष की जटा की राख मधु के साथ चाटने से वमन तुरन्त रुक जाता है।

१०—पिश्ता खाने से वमन शान्त होता है।

११—पित्तपापड़े का काढ़ा पीने से वमन शान्त होता है।

१२—आग में ईंट या ईंट का टुकड़ा तपाकर जल में बुझाकर वही जल पीने से वमन शान्त होता है।

१३—नागर मोथा का चूर्ण खाने से वमन दूर होता है।

१४—दो रत्ती की मात्रा में शुद्ध तूतिया मट्ठे के साथ सेवन करने से विष पीने वाले का विष वमन द्वारा निकल जाता है।

दाह-रोग

१—अल्प परिमाण में धनियाँ लेकर चावल के धोवन में भिंगो रखें। रात भर छोड़ दें। प्रातः वही जल छानकर मधु मिलाकर पीयें, अन्तर्दाह में यह परम उपकारी है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

२—मधु संयुक्त जल पीने से तृषा का वेग शान्त होता है।

३—आन्तरिक दाह के लिए फालसा का शरबत पीना लाभदायक है।

४—मिश्री-कुम्हड़े के रस में मिलाकर सेवन करने से उदर का दाह मिट जाता है।

५—बबूल की पत्तियों को पीसकर मिश्री मिला दें। फिर उसमें गाय का दूध मिलाकर सेवन करें। इस उपचार से हृदय का दाह तुरन्त शान्त होता है।

६—पैरों के तलवों में दाह होता हो तो भटकटैया पानी में रगड़कर लेप करना चाहिये। इस उपचार से दाह शान्त हो जाता है।

७—आग से जल जाने से उत्पन्न दाह को मिटाने के लिए कच्चा गाजर पीसकर लेप करना चाहिये।

८—पानी औंटकर उसमें मसूर की दाल पीसकर लेप करने से पैर का दाह शान्त होता है।

९—आग से जल जाने से उत्पन्न दाह को शान्त करने के लिए मेथी के पत्तों का रस लगाना हितकर है।

१०—अनार के रस के साथ सनाय का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से दाह मिटता है।

११—कच्ची सतावर को मधु और दूध मिलाकर पीने से दाह शान्त होता है।

उन्माद-रोग

१—सरसों के तेल का नस्य लेना चाहिये, सरसों के तेल की मालिश करनी चाहिये, और हाथ-पैर बाँधकर धूप में छोड़ देना चाहिये।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

२—प्रतिदिन प्रातःकाल पुराना घी सेवन करने से उपकार होता है।

३—मधु के साथ ताल का रस पीने से उपकार होता है।

४—अमरूद का रस प्रातःकाल नित्य सेवन करने से पित्तजनित उन्माद दूर होता है।

५—मस्तक पर नीबू के रस से मालिश करने से उन्माद छूट जाता है।

६—गोरैया पक्षी के बच्चे का मांस सुखाकर और उसका चूर्ण तैयार करके दूध के साथ सेवन करने से उन्माद रोग नष्ट होता है।

७—दशमूल के काढ़े में बकरे के माँस का जूस मिलाकर सेवन करने से उन्माद-रोग दूर हो जाता है।

८—कोयल का मांस खिलाकर वायु वेग से रहित स्थान में सुला देना चाहिये। नींद टूटने पर स्मृतिनाश और मनोविकार दूर हो जायगा।

मूर्च्छा-रोग

१—पीपल पानी में घिसकर रोगी के कानों में, नेत्रों में लगाइये। मूर्च्छा मिट जायगी।

२—पेठे की तरकारी घी में पकाकर रोगी को खिलाने से मूर्च्छा दूर होती है। सिर में चक्कर आना भी बन्द हो जाता है।

३—बादाम का तेल सिर में मलने से सिर की पीड़ा के साथ चक्कर आना शान्त होता है।

४—गरमी के कारण मूर्च्छा आ गयी हो तो मस्तक और नेत्रों पर गुलाब जल की छींटें देनी चाहिये।

५—चूना और नौसादर मिलाकर सूँघने से मूर्च्छा दूर होती है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मृगी-रोग

१—मृगी रोग में सहिंजन का काढ़ा पीना लाभदायक है।

२—छिलका समेत रीठा पीस कर कान में डालने से मृगी रोग दूर होता है।

३—मधु के साथ वच का चूर्ण चाटना मृगी रोग का नाश करता है।

४—राई के चूर्ण का नस्य लेने से मृगी रोग मिटता है।

५—पलाश की जड़ पानी में पीस कर नाक में सुड़कने से मृगी शांत होती है।

६—नींबू के रस के साथ गोरखमुंडी का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से मृगी-रोग दूर होता है।

७—उत्तर दिशा से नागरमोथा की जड़ रविवार या मंगलवार को उखाड़ लाइये। उसे गंगा-जल से धोकर पीस डालें और और गाय के दूध के साथ सेवन करें। इससे मृगी शान्त हो जायगी।

८—भटकटैया का रस नाक में डालने से मृगी रोग में लाभ होता है।

वात-रोग

१—प्रतिदिन रात्रि में भोजन के बाद एक तोला रेंड़ी का तेल एक छटाँक गाय के दूध के साथ सेवन करने से वात रोग शान्त रहता है।

२—प्रतिदिन प्रातःकाल एक तोला लहसुन खाने से वातरोग का दमन होता है।

३—करील की लकड़ी की राख तैयार कर घी के साथ चाटने से वात की वेदना दूर होती है।

४—रेंड़ी के तेल में सोंठ का चूर्ण मिलाकर पीने से कटि-पीड़ा शान्त होती है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

५—कपास के बीजों के तेल से मालिश करने से गठिया रोग शान्त रहता है।

६—कपास की पत्तियों को तिल-तैल में पका कर उसी तेल से मालिश करने से वात की वेदना दूर होती है।

७—एरंड की जड़ की छाल और उड़द की दाल समान भागों में लेकर काढ़ा बना कर सेवन करने से वात-रोग नष्ट होता है।

८—उड़द और सोंठ का काढ़ा आधा सेर जल में पका कर आधा पाव शेष रहे तो पीना चाहिये। इस उपचार से लकवा का नाश होता है।

९—रेंड़ी की जड़ एक सेर ला कर चार सेर जल के साथ काढ़ा तैयार करें। एक सेर जल शेष रहे तब उसमें आधा सेर रेंड़ी का तेल छोड़ दें। इसके बाद फिर काढ़े को आग पर पकायें। जब एक पाव शेष रहे तब उतार कर मालिश के काम में लायें। इस उपचार से हाथ-पैर और कमर आदि सभी अंगों का दर्द मिट जाता है।

१०—रेंड़ी का अल्प तेल गोमूत्र में मिलाकर पीने से गृध्रसी की शिकायत दूर होती है।

११—रेंड़ी के बीजों का गूदा दूध में मिलाकर औंटने से जो काढ़ा तैयार होता है उसे सेवन करने से वात की वेदना दूर होती है।

१२—शक्कर, सोंठ और रेंड़ी का गूदा समान भागों में लेकर पीस-कर गोलियाँ तैयार कर सेवन करने से गठिया रोग का दमन होता है।

१३—रेंड़ी की जड़ का काढ़ा पका कर उसमें जवाखार मिलाकर सेवन करने से कमर, पसली और हृदय की वेदना शान्त होती है।

१४—असगंध की जड़ और पत्तियाँ पानी में पीसकर पीने से गठिया रोग दूर होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

१५—मदार की पत्तियों को तेल में पकाकर मालिश करने से लकवा रोग का नाश हो जाता है।

१६—अदरख के रस में अजवाइन का रस मिलाकर लगाने से वायु की वेदना शान्त होती है।

१७—मदार की जड़ १ पाव लेकर दो सेर जल के साथ काढ़ा पकाइये। जब आधा सेर पानी शेष रहे तो उसमें एक पाव रेंड़ी का तेल मिला दें। फिर इस काढ़े को धीमी आँच पर पकाइये। जब पानी जल जाय तो अवशिष्ट तेल से वेदना के स्थानों पर मालिश करें, यह उपचार वात के दर्द को दूर करने में अचूक है।

१८—मुंडी का चूर्ण एक तोला की मात्रा में खाने से जोड़ों का दर्द तुरन्त दूर होता है।

१९—मुंडी का चूर्ण और लवंग का चूर्ण एक में मिलाकर खाने से और ऊपर से बकरी का दूध पीने से कम्प रोग दूर होता है।

२०—गोखरू और सोंठ का काढ़ा पका कर पीने से कटि की वेदना शान्त होती है।

२१—गर्म दूध में सेंधा नमक की पोटली भिगोकर उससे वेदना स्थल को सेंकने से वेदना मिट जाती है।

२२—गोलमिर्च का चूर्ण नारियल के तेल में मिलाकर मालिश करने से वात की वेदना शान्त होती है।

२३—जीरा प्याज में मिलाकर रेंड़ी के तेल के साथ पीसकर लगाने से वात की वेदना का दमन होता है।

२४—नीम के तेल से मालिश करने से गठिया रोग शान्त होता है।

२५—नीमकी छाल पीसकर गर्म अवस्था में लगाने से वात की वेदना जाती रहती है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

२६—जमालगोटे की मींगी के तेल से मालिश करने से गठिया की सूजन दूर होती है।

२७—जायफल का तेल लगाने से अर्धांग वात शान्त रहता है।

२८—सोंठ और बच समान भागों में लेकर मधु के साथ प्रातः काल और सन्ध्याकाल में विधिवत् सेवन करने से लकवा का नाश होता है।

२९—मालकाँगनी की पत्तियों को रेंड़ी के तेल में पीसकर मालिश करने से कमर की वेदना दूर होती है।

३०—मिट्टी के तेल की मालिश करने से वात की वेदना शान्त होती है।

३१—रेंड़ी के तेल के साथ हरीतकी पीसकर मिला दें और उसका विधिवत् सेवन करें। इससे गृध्रसी रोग अच्छा होता है।

३२—हरसिंगार के फूलों का काढ़ा पकाकर पीने से वात रोग का नाश होता है।

३२—सरसों,अदरख, आम की नयी जड़ एक साथ पीसकर मालिश करने से जोड़ों की वेदना दूर होती है।

३३—सहिंजन के बीज पीसकर गर्म कर लेप करने से गठिया का दर्द मिटता है।

३४—सोंठ के काढ़े में रेंड़ी का तेल मिलाकर पीने से गठिया का दमन होता है।

३५—गुड़ के पाक में मेथी का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से गठिया की शिकायत दूर होती है।

३६—मेंहदी की पत्तियों को पीसकर गर्म कर मालिश करने से वात वेदना शान्त होती है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

३७—पुराना घी वेदना के स्थान में मलकर सोंठ के चूर्ण से पट्टी बाँध रखने से वात-रोग शान्त होता है।

३८—लहसुन और अदरख एक में मिलाकर पीस डालें। वेदना के स्थान में इसका प्रलेप देकर बाँध रखें। इस उपचार से वात रोग का दमन होता है।

३९—शुद्ध सरसों के तेल से मालिश करके नरम मदार की पत्तियों से उस स्थान को ढक दें; फिर नमक की पोटली गरम करके उन पत्तियों के ऊपर बार-बार सेंक दें। वात-रोग शान्त हो जायगा।

४०—धतूर के पत्तों के रस के साथ अफीम रगड़ कर वेदना के स्थान पर मलने से वात-वेदना दूर होती है।

४१—अदरख और मुसब्बर एक में मिलाकर वेदना के स्थान पर मालिश करने से लाभ होता है।

४२—रेंड़ी के बड़े पत्ते गरम करके सूजन और दर्द के स्थान पर रात भर बाँध रखना चाहिये।

४३—अदरख और लहसुन समान भागों में लेकर एक साथ पीस डालें। इसके बाद उसे आग की आँच पर गरम करके वेदना के स्थान पर प्रलेप करें, उपकार होगा।

४४—पुराना घी, सोंठ का चूर्ण एक साथ गरम करके मालिश करने से उपकार होता है।

४५—प्रतिदिन रात के समय भोजन के बाद एक छटाँक गाय के दूध के साथ एक तोला रेंड़ी का तेल सेवन करने से वात-रोग का दमन होता है।

४६—धतूर के पत्ते के रस के साथ कुछ अफीम मिलाकर आग की आँच में गरम करके वेदना के स्थान पर मालिश करने से वेदना मिटती है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

४७—अदरख और मुसब्बर समान भागों में लेकर पीस डालें। इसके बाद उसे आग की आँच पर गरम करके वेदना के स्थान पर प्रलेप करें। इससे वात रोग का दमन होता है।

४८—पंचमूल या दशमूल कुल दो तोला की मात्रा में लेकर जल में औंट कर काढ़ा पकाइये। आध पाव शेष रहे तो सेवन करें। वात रोग का शमन होगा।

रक्त-पित्त

१—गुलाब-जल एक तोला, केवड़ा का अर्क एक तोला, नरम गूलर का रस एक तोला एकत्र कर दो-तीन दिन नियमपूर्वक सेवन करने से प्रबल रक्त-पित्त रोग शान्त होता है।

२—शुद्ध गंधक और खस का चूर्ण मिलाकर खाने से पित्त विकार और रक्त-विकार शान्त होता है।

३—मिश्री के साथ खस का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से रक्त-पित्त दोष का शमन होता है।

४—शहद और गूलर की कोमल पत्तियों का रस मिलाकर पीने से पित्त की शान्ति होती है।

५—गोखरू की जड़ का काढ़ा पीने से पित्त रोग शान्त होता है।

६—ढाक के फूलों का काढ़ा तैयार कर शक्कर मिलाकर पीने से पित्त शान्त होता है।

७—पालकी के बीजों का चूर्ण शीतल जल के साथ खाने से पित्त का प्रकोप शान्त होता है।

८—पीपल का चूर्ण मधु के साथ चाटने से रक्त-पित्त शान्त होता है।

९—ब्राह्मी का काढ़ा पीने से रक्त शुद्ध होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

१०—रक्त-पित्त में पहले उपवास होना चाहिये। ऊर्ध्वगामी होने से विरेचन अर्थात् जुलाब और निम्नगामी होने से वमन कराने से रक्त-पित्त में विशेष उपकार होता है।

११—गाय का घी १ तोला, लावा का चूर्ण दो तोला, मधु एक तोला मिलाकर प्रातःकाल सेवन करने से रक्तपित्त आराम होता है।

१२—छोहाड़ा, खजूर, किशमिश, मुलेठी, प्रत्येक ग्यारह आना मात्रा में लेकर आधा सेर जल में काढ़ा पकाइये। आध पाव शेष रहे तो उतारकर आधा तोला चीनी मिलाकर प्रातःकाल सेवन करें। इससे रक्तपित्त नष्ट होता है।

१३—चीनी, मुलेठी, छोहाड़ा, खजूर, किशमिश दो-दो तोला एक साथ चूर्ण तैयार कर मधु मिलाकर आधा तोला परिमाण की गोलियाँ तैयार करें। शीतल जल के साथ प्रातःकाल सेवन करें। खाँसी और रक्त बन्द होकर रक्त-पित्त आराम हो जायगा।

१४—मधु के साथ गूलर का रस सेवन करने से रक्तपित्त का नाश होता है।

१५—मधु के साथ हरड़ खाने से अग्नि प्रदीप्त होती है। श्लेष्मा, रक्तपित्त और अतिसार रोग नष्ट होता है।

१६—दूब का रस, अनार के फूलों का रस, गोबर का रस चीनी मिलाकर सेवन करने से रक्तपित्त का दमन होता है।

१७—सौ बार का धोया घी माथे पर लगाने से रक्तपित्त दूर होता है।

आमवात

१—बालू की पोटली गरम करके धीरे-धीरे सेंकने से आमवात का कष्ट दूर होता है।

२—दशमूल, गुलंच (गुरुच) एरण्डमूल, रास्ना, सोंठ, देवदारु

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सब समेत दो तोला लेकर आधा सेर जल में औंटना चाहिये। जब आध पाव शेष रहे तो उतार कर रेंड़ी के तेल के साथ सेवन करने से उपकार होता है।

३—चिरायता, आधा तोला, एक छटाँक गरम जल में भिगोकर वही जल सेवन करने से आमवात आरोग्य होता है।

४—सोंठ और गोखरू दो-दो तोला लेकर आधा सेर जल में औंटा-कर काढ़ा तैयार करें। आध पाव शेष रहे तो उतार कर छान कर सेवन करें। आमवात की यह उत्तम दवा है।

५—दशमूल का काढ़ा पीपल के चूर्ण के साथ सेवन करना आम-वात में लाभदायक है। आधा सेर जल में औंटकर आधा पाव शेष रहे, तब उतार लेना चाहिये।

६ - मदार का दूध वेदना या सूजन के स्थान पर मालिश करने से उपकार होता है।

७—तिल के तेल में लहसुन चार आने की मात्रा में पीस कर सेवन करने से लाभ होता है।

८—ब्राह्मी शाक घी में भून कर खाने से लाभ होता है।

९—गुरुच का रस और सोंठ मिलाकर पीने से आमवात रोग दूर होता है।

१०—आधा पाव काँजी में एक तोला सोंठ का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से आमवात रोग का दमन होता है।

११—सिरिप वृक्ष की छाल दो तोला लेकर आधा सेर जल में औंटा डालें। आध पाव शेष रहे तो उतार कर सेवन करें। सब प्रकार के वात रोग के लिए यह उपकारी है।

१२—मदार वृक्ष की छाल, काली मूँग, बेर, उड़द, तीसी, रास्ना,

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

देवदारु इन्हें समान भागों में लेकर काँजी के साथ पीस डालें। फिर आग से गरम करके वेदना के स्थान में लगावें।

१२—सरसों का तेल जितना हो, उसका आधा तारपीन तेल लें। दोनों तेल एक में मिलाकर उसमें जरा कपूर मिलाकर मालिश करें। वातकफ जनित वक्षस्थल की वेदना मिट जायगी।

वातरक्त

१—दो तोला की मात्रा में गुरुच का काढ़ा लेकर उसमें गुग्गुल पीस कर दो आने की मात्रा में मिलाकर सेवन करने से वातरक्त शान्त होता है।

२—गुरुच, धनियाँ, सोंठ प्रत्येक ग्यारह आने के परिमाण में लेकर आधा सेर जल में काढ़ा औंटाकर तैयार करें। आध पाव शेष रहे तो उतार कर छान कर पी जायँ। वातरक्त को यह दवा शान्त कर देती है।

३—कुटकी और मुंडी का चूर्ण मधु में मिलाकर खाने से वातरक्त का नाश होता है।

४—हरड़ का चूर्ण एक भाग और दो भाग पुराना गुड़ एक में मिला कर खा जायँ। ऊपर से गुरुच का काढ़ा पीयें। इससे वातरक्त का नाश हो जायगा।

५—बकरी के दूध के साथ गेहूँ का चूर्ण पीस कर घी का प्रलेप देकर वातरक्त में प्रलेप करना उपकारी होता है।

६—त्रिफला, शतमूली, कुटकी, परवल और गुरुच का काढ़ा तैयार कर मधु मिलाकर पीने से वातरक्त का दमन होता है।

७—गुरुच, मुलेठी, सोंठ, कुटकी, आँवला, मोथा, हलदी, पीपल, प्रत्येक आधा तोला लेकर एक सेर जल में काढ़ा पकाइये। आधपाव शेष रहे तो उतार कर ठंढा हो जाने दें। उससे एक तोला मधु का

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रक्षेप देकर सेवन करें। इस उपचार से कफ जनित वातरक्त आरोग्य होता है।

८—बहेड़ा, परवल की पत्ती, गुरुच, आँवला, शतमूली, कुटकी, हरड़, समान भागों में लेकर सब समेत दो तोला रख लें। आधा सेर जल में पकाकर काढ़ा तैयार करें। आध पाव शेष रहे तो उतार कर सेवन करें। इससे वात-रक्त दूर हो जायगा।

अम्लपित्त और अम्ल शूल

१—पुराना गुड़, पीपल, आँवला तीनों की बटिकाएं तैयार कर सेवन करने से पित्त-कफ जनित अम्लपित्त नष्ट होता है।

२—किशमिश और दारु हलदी का काढ़ा मधु के साथ पीने से अम्लपित्त दूर हो जाता है।

३—त्रिफला पीसकर गरम लौह पात्र पर लेप देकर रात भर के लिए छोड़ दें। उसी कल्प को मधु और चीनी के साथ सेवन करने से कफ-पित्त जनित अम्लपित्त आरोग्य होता है।

४—भूसी विहीन जौ, आमलकी, गुड़त्वक्, बड़ी इलायची, और तेजपात का काढ़ा पकाकर मधु के साथ सेवन करने से अम्लपित्त शान्त होता है।

५—बड़ी हरड़ का चूर्ण मधु अथवा गुड़ के साथ खाने से अम्लपित्त दूर होता है।

६—हरड़ के चूर्ण के साथ जवाखार मिलाकर खाने से अम्लपित्त शान्त होता है।

७—परवल, गुरुच, नीम की छाल का काढ़ा मधु मिलाकर पीने से अम्लपित्त दूर होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

शूल-रोग

१—प्रतिदिन प्रातःकाल दो तोला की मात्रा में लहसुन का रस निकाल कर उसमें मधु मिलाकर सेवन करने से वात श्लैष्मिक शूल दूर होता है।

२—दो तोला मिश्री, भूसी हीन तिल आठ तोला लेकर दूध के साथ पायस तैयार करें। उतारते समय उसमें दो तोला सोंठ का चूर्ण मिलाकर पीयें। इसके परिणाम से शूल का दमन होता है।

३—घोंघे की खोलों का भस्म बारह से चौबीस रत्ती परिमाण में लेकर गरम जल के साथ सेवन करने से शूल रोग की निवृत्ति होती है।

४—इन्द्रयव, एरण्ड की जड़, सोंठ का काढ़ा पकाकर उसमें हींग और काला नमक मिलाकर पीने से तुरन्त ही शूल शान्त हो जाता है।

५—यवाखार, सोंठ, हरड़, सेंधानमक, अजवाइन समान मात्रा में लेकर चूर्ण तैयार करें। तीन माशे की मात्रा में सेवन करने से शूल रोग नष्ट हो जाता है।

६—गोलमिर्च आठ तोला, जीरा चार तोला, इमली दो तोला, नमक एक तोला लेकर चूर्ण तैयार करें। इस चूर्ण में नीबू का रस फेट दें। तीन-तीन माशे की मात्रा में सेवन करें। शूल का नाश हो ही जायगा।

७—बोतल में सहने योग्य गरम पानी भर कर पेट पर धीरे-धीरे चलाने से शूल रोग शान्त होता है।

८—गुरुच, हरड़, बहेड़ा, सोंठ, पीपल, गोलमिर्च, शतमूली सब समेत दो तोला लेकर आधा सेर जल में काढ़ा तैयार करें। आध पाव शेष रहे तो उतार कर सेवन करें। शूल रोग का नाश हो जायगा।

९—हरड़, सोंठ, बहेड़ा, आँवला, मुलेठी, सेंधा नमक, तिल-भस्म पीपल समान भागों में लेकर चूर्ण तैयार करें। घी और मधु

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मिलाकर चाटकर तुरन्त दूध पीना चाहिये। इससे शूल रोग की निवृत्ति होती है।

विशूचिका, (कालरा) हैजा

१—सूखा मिर्चा, आठ-दस गोलमिर्च, आग में जलाकर आध पाव ठंढे जल में छोड़ दें। उस जल को छानकर आधी छटाँक की मात्रा में पीने से हैजा में लाभ होता है।

२—अफीम तीन रत्ती, पुराना गुड़ दो रत्ती, लाल चन्दन दो रत्ती, एकत्र कर तीन गोलियाँ तैयार करें। एक-एक सेवन करें। विशेष लाभ होगा।

३—कपूर एक रत्ती, मिरचे का चूर्ण एक रत्ती, हींग आधी रत्ती, अफीम आधी रत्ती, और गुड़ मिलाकर गोली तैयार करें। हैजा का प्रथम लक्षण देखकर आधी छटाँक चीनी के शरबत के साथ कुछ बूँद नीबू का रस मिलाकर जब तक आरोग्य न हो तब तक गोली खिलाइये। आध घंटे के अन्तर में आधी गोली सेवन करने से निश्चय ही यह रोग छूट जायगा।

४—आक की जड़ का छिलका और काली मिर्च दोनों समान मात्रा में ले लें। इन्हें अदरख के रस में घोंटकर उड़द के बराबर गोलियाँ बना लें। एक गोली एक बार रोगी को खिलाइये। यह बड़ी लाभदायक दवा है।

५—यदि पेशाब में रुकावट हो तो थोड़ा सा कलमी शोरा पानी में घोल लें। फिर उसमें एक कपड़ा भिगोकर नाभि और पेड़ू पर रखें; पेशाब अवश्य उतरेगा।

६—बच्चे की कै किसी भी दवा से बन्द न हो रही हो तो तुलसी की पत्तियों का रस अल्प मधु में मिलाकर पिलाइये।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

७—काफूर का रस, कत्थे का पानी या बेल का गूदा दस्त रोकने की अच्छी दवाएँ हैं।

८—नारंगी का छिलका और गोलमिर्च एक साथ पीसकर सेवन करने से हैजा रोग में विशेष लाभ होता है।

९—एक गोलमिर्च सुई से छेदकर प्रदीप के ऊपर रखने पर जब धुआँ निकलने लगे, तब रोगी की नाक के पास रखकर धुआँ खींचने को कहिये। इससे हैजा रोग का हिक्का दूर होता है।

१०—अधिक परिमाण में बर्फ का व्यवहार करने से कभी-कभी उपकार हो सकता है।

११—इन्द्रयव की बुकनी ४ तोला, एक सेर जल के साथ पकाइये। आठ छटाँक शेष रहे तो उतार लें। एक या दो छटाँक की मात्रा में उम्र के विचार से रोगी को सेवन कराइये। विशेष उपकार होगा।

१२—दो या तीन ग्रेन कपूर और मिरचा एक में मिलाकर मैदे की गोली में डालकर प्रति दिन प्रातःकाल और शाम को एक-एक गोली सेवन करने से हैजा प्रायः नहीं होता। यदि हो भी जाय तो जरा अफीम मिलाकर सेवन करना चाहिये।

१३—सफेद अपाङ्ग जड़ समेत उखाड़कर एक पौधे की समूची जड़ और एक गोलमिर्च एक में पीसकर एक बार जिसे दस्त हुआ हो, ऐसे रोगी को सेवन कराने से निश्चय ही रोग आरोग्य होता है। तारतम्यानुसार छोटी या बड़ी जड़ लेनी चाहिये। समूची जड़ एक बार पीसकर समान भाग में एक-एक घंटे पर पिलायें।

१४—पीपल का चूर्ण, कपूर और हींग समान भागों में लेकर दो रत्ती की मात्रा में सेवन करना हैजा को रोक देता है।

१५—अर्क कपूर इस रोग में परम लाभकारी है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

१६—चिड़चिड़ा की जड़ खाकर पुदीना के अर्क में पीसकर सेवन कराने से हैजा रुक जाता है।

१७—सौंफ का अर्क, पुदीना का अर्क, लवंग का अर्क पिलाने से प्यास का शमन होता है। दाह मिटता है।

१८—मँदार की जड़ की छाल और अदरख का रस एक में मिला कर खरल करें, फिर चने के परिमाण में गोलियाँ बनायें। दो-दो घण्टे पर एक गोली खिलाने से हैजा शान्त हो जाता है।

पेट के रोग

पेट फूल जाने पर—

१—दशमूल का काढ़ा पका कर उसमें घी, तेल और मज्जा पका कर पेट पर मलने से वायु का नाश होता है।

२—साफ लकड़ी के अंगार का बारीक चूर्ण दो रत्ती की मात्रा में लेकर गुलाब जल या सौंफ के जल के साथ सेवन करने से पेट का फूलना शमित होता है।

पेट के दर्द में उदर विकार में—

१—सेंधा नमक, मिर्च, अजवाइन समान भागों में लेकर प्रातः-काल प्रति दिन गरम जल के साथ सेवन करना चाहिये। इससे पेट के विकार दूर हो जाते हैं।

२—सेंधा नमक के साथ अजमोद का चूर्ण खाने से पेट की वेदना तुरन्त दूर हो जाती है।

३—कौड़ी का भस्म और गोल मिर्च का चूर्ण लेकर नीबू के रस में गोलियाँ तैयार करें। इस गोली का सेवन करने से उदर-शूल शान्त होता है।

४—गोरखमुंडी का काढ़ा पीने से पेट की पीड़ा मिट जाती है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

५—सोंठ के चूर्ण में जवाखार मिलाकर सेवन करने से पेट का दर्द दूर होता है।

६—आम की पत्तियों का रस पीने से पेट का दर्द मिटता है।

७—काला नमक, अजवाइन और तालीसपत्र का चूर्ण खाने से पेट का दर्द दूर होता है।

८—गुड़ और दारुहलदी की जड़ की छाल का काढ़ा पीने से पेट की पीड़ा शान्त होती है।

९—दालचीनी के तेल से पेट की मालिश करने से पेट का दर्द दूर होता है।

१०—काली मिर्च, सेंधा नमक और भुना हुआ जीरा नासपाती के रस के साथ सेवन करने से उदर के विकार दूर होते हैं।

११—अजवाइन का चूर्ण खाकर ऊपर से फालसे का शरबत पीने से पेट का शूल नष्ट होता है।

१२—बकायन की पत्तियों के काढ़े में सोंठ का चूर्ण मिलाकर पीने से पेट की पीड़ा शान्त होती है।

१३—सहिंजन की जड़, सरसों और अदरख समान भागों में लेकर गोलियाँ तैयार करें, गोमूत्र के साथ सेवन करें, इससे उदर की पीड़ा मिट जायगी।

१४—सुगन्धवाला की जड़ पीस कर पीने से पेट का दर्द दूर होता है।

१५—लाल मिर्चा, कपूर और भुनी हींग तेल और गोमूत्र में पीस कर नाभि के स्थान पर लेप करने से पेट का दर्द मिट जाता है।

मन्दाग्नि, अजीर्ण, ग्रहणी

१—सोंठ, धनियाँ दोनों समान भागों में लेकर दो तोला रख लें। आधा सेर जल में वही दो तोला डाल कर औंट कर काढ़ा पकायें,

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जब आध पाव शेष रहे तब उतार कर रोगी को पिलायें। इससे मन्दाग्नि और अजीर्ण रोग का नाश होता है।

२—प्रातःकाल खाली पेट में शीतल जल पीने से विदग्धाजीर्ण आरोग्य होता है और अग्नि प्रदीप्त होती है।

३—सेंधा नमक, पीपल; हींग, सोंठ इन चीजों को समान भागों में लेकर एक साथ पीस डालें। इसका पेट के ऊपर प्रलेप देने से मन्दाग्नि, अजीर्ण का नाश होता है।

४—अजवाइन अच्छी तरह पीस कर चार आने परिमाण में रख लें और उसमें सेंधा नमक दो आने परिमाण में लेकर एक साथ मिला दें। इसका सेवन करने से मन्दाग्नि नष्ट होती है। अजीर्ण दूर होता है।

५—एक तोला अजवाइन, एक तोला सोंठ एक में कूट कर एक पाव गरम जल में दो घण्टे तक भिगो रक्खें। बाद को वही जल पीने से मन्दाग्नि, अजीर्ण और उदर का फूल उठना आरोग्य होता है।

६—अदरख और नमक एक में मिलाकर सेवन करने से अग्नि तेज होती है।

७—सोंठ एक भाग, वच दो भाग, पीपल तीन भाग, सोंठ चार भाग, अजवाइन पाँच भाग, हरीतकी छः भाग, चीता का मूल सात भाग और कूट आठ भाग संग्रह करें। इनका चूर्ण तैयार करें। दही को तोड़ कर शिथिल करके उसके साथ यह चूर्ण अल्प मात्रा में सेवन करें। यह उपचार अग्नि को तेज करता है। उदर-विकार का नाशक है। इसमें गुल्म यकृत्–प्लीहादि रोगों को नष्ट करने का सामर्थ्य है।

८—हरड़ और पीपल कांजी के साथ पीस कर सेंधा नमक के साथ खाने से अग्नि तेज होती है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

९—पीपल, हरीतकी, काला नमक एक में मिलाकर (चूर्ण) सेवन करने से मन्दाग्नि का निवारण होता है।

१०—पीपल, चीता, हरड़, सेंधानमक समान भागों में लेकर चूर्ण तैयार करें। ६ माशे की एक मात्रा होती है। गरम जल के साथ सेवन करें। यह अग्निवर्धक है।

११—अजवाइन, सेंधा नमक, स्याहजीरा, सोंठ, मिर्च, पीपल सफेद जीरा इन्हें समान भागों में लेकर कूट कर चूर्ण तैयार करें। इसका आठवाँ भाग हींग भून कर इसमें मिला दें। भोजन के पूर्व इसका अल्पमात्रा में सेवन करें, इससे अग्नि अति प्रदीप्त होती है।

१२—हरीतकी और पीपल समभागों में लेकर सब समेत दो तोला रख लें। आधा सेर जल में औंटकर काढ़ा तैयार करें। जब आधा पाव शेष रहे तो उतार कर सेंधा नमक के साथ सेवन करें। इससे अजीर्ण, मन्दाग्नि दूर होती है।

१३—लवंग, हींग, अजवाइन क्रम से दो आना, तीन रत्ती और एक आना मात्रा में लेकर एक साथ पीस कर उसमें काला नमक मिलाकर सेवन करें। मन्दाग्नि और अजीर्ण रोग की यह उत्तम दवा है।

१४—प्रति दिन प्रातःकाल आधा तोला अदरख के रस के साथ आधा तोला सेंधा नमक पीस कर जरा गरम करके सेवन करें। इससे मंदाग्नि और अजीर्ण रोग दूर होता है।

१५—लाल कचनार का काढ़ा पीने से मन्दाग्नि का नाश होता है।

१६—नींबू और घीकुआर के रस से सात-सात बार भावना दी हुई अजवाइन का चूर्ण सेंधा नमक के साथ सेवन करने से मन्दाग्नि दूर होती है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

१७—चने के पत्तों के रस में जवाखार मिलाकर खाने से मन्दाग्नि दूर होती है।

१८—चिनसुर का काढ़ा पकाकर सेवन करने से अग्नि तेज होती है।

१९—सेंधा नमक, अदरख नीबू के रस में मिलाकर सेवन करने से मन्दाग्नि दूर होती है।

२०—सोंठ और धनियाँ का काढ़ा पीने से जठराग्नि बढ़ती है।

२१—सोंठ और गंधाबिरोजा का चूर्ण खाने से मन्दाग्नि मिटती है।

२२—गोल मिर्च और भांग एक में पीस कर मधु के साथ सेवन करने से भूख बढ़ती है।

२३—पीपल का चूर्ण मकोय के काढ़े के साथ पीने से मन्दाग्नि दूर होती है।

२४—गोल मिर्च का काढ़ा पीने से मन्दाग्नि का नाश होता है।

२५—सोंठ, चीनी और लाल मिर्चा तीनों समान भागों में लेकर गोली बनाकर खाने से मन्दाग्नि दूर होती है।

२६—हरीतकी चूर्ण सेंधा नमक के साथ सेवन करने से मन्दाग्नि दूर होती है।

२७—गुड़ के साथ सोंठ का चूर्ण सेवन करने से अग्नि प्रदीप्त होती है।

२८—सोंठ, सेंधा नमक, भुनी हींग का चूर्ण गरम जल के साथ सेवन करने से अजीर्ण रोग का नाश होता है।

यकृत्-प्लीहा

१—गुरुच दो तोला लेकर आधा सेर जल में औंट कर काढ़ा तैयार करें। आधा पाव शेष रहे तो उतार कर सेवन करें। इससे प्लीहा यकृत् का नाश होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

२—गुरुच, सोंठ, कण्टकारी इन तीनों को समान भागों में लेकर सब समेत दो तोला रख लें। आधा सेर जल में औंटकर काढ़ा पकाइये। आधा पाव शेष रहे तो उतार कर रोगी को पिलाइये। इससे प्लीहा यकृत् का नाश होता है।

३—थोड़ी चीनी के साथ २० बूँद पपीते का दूध सेवन करने से यकृत् में विशेष लाभ होता है।

४—घृतकुमारी के रस के साथ छः रत्ती की मात्रा में हलदी का चूर्ण सेवन करने से प्लीहा का नाश होता है।

५—ढाई तोला पुराने गुड़ के साथ आधा पाव त्रिफला का काढ़ा पीना चाहिये। प्लीहा का नाश होगा। आधा सेर जल में काढ़ा पकाना होगा और आधा पाव शेप रहे तो उतारना होगा।

६—लहसुन का छिलका निकाल कर चार आना मात्रा में वजन कर लें। फिर काली तिल के तैल के साथ उसे पीसना चाहिये। इसका सेवन करने से प्लीहा, विषम ज्वर और वात रोग दूर होता है।

७—दही के पानी के साथ अपामार्ग का क्षार सेवन करने से यकृत् और प्लीहा का नाश होता है।

८—पपीता विधिपूर्वक सेवन करने से यकृत् और प्लीहा रोग निर्मूल होता है।

९—पिपरामूल, हरड़, जवाखार, लहसुन समान भागों में लेकर चार माशे गोमूत्र के साथ सेवन करने से प्लीहा-यकृत् नष्ट हो जाते हैं।

१०—पुराना गुड़ चार आना, उसी मात्रा में स्याहजीरा का चूर्ण एक में मिलाकर सेवन करने से प्लीहा का नाश होता है।

११—गुरुच का रस जल के बिना ही निकाल लें। आधा तोला रस के साथ अल्प मधु और पीपल चूर्ण मिलाकर सेवन करने से अरुचि प्लीहा का नाश होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

१२—बकरी का दूध और अदरख का रस सम परिमाण में लेकर प्रति दिन सेवन करने से सात दिन के भीतर प्लीहा का नाश होता है।

१३—कच्ची इमली पीसकर यकृत् प्लीहा के स्थान पर प्रलेप करने से एक ही सप्ताह में प्लीहा यकृत्—नष्ट हो जाते हैं। प्रति दिन दो बार सेवन करें।

१४—इमली की कच्ची पत्तियाँ कूट कर गरम करें। इसको रोटी की तरह बना कर प्लीहा और यकृत के ऊपर सटा दें। इससे यह रोग शीघ्र ही मिट जाता है।

गुल्म-रोग

[गुल्म रोग को अंग्रेजी में Tumour कहते हैं।]

१—जवाखार, अजवाइन, बच, हरीतकी, हींग, सेंधा नमक, अमलवेत इन सबका चूर्ण तैयार कर प्रति दिन छः माशे की मात्रा में सेवन करने से गुल्म रोग का नाश हो जाता है।

२—रेंडी का तेल गरम जल के साथ सेवन करने से कुछ दिनों में गुल्म रोग का दमन होता है।

३—गुग्गुल गोमूत्र के साथ पीने से गुल्म का नाश होता है।

४—गोरखमुण्डी एक तोला लेकर मट्ठे के साथ सेवन करने से गुल्म रोग का नाश होता है।

५—पीपल का चूर्ण पलासखार की भावना देकर सेवन करने से कुछ ही दिनों में गुल्म रोग का शमन होता है।

६—सरसों, अदरख और सहिंजन की छाल सबको पीस कर गोलियाँ तैयार करें और गोमूत्र के साथ एक-एक गोली सेवन करें। इस उपचार से कुछ ही दिनों में गुल्म रोग का शमन हो जायगा।

७—मट्ठे के साथ काला नमक और अजवाइन का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से वायुगोला का नाश होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

८—पपीते का दूध चार-पाँच बूँद की मात्रा में पक्के केले में भर कर सेवन करने से वायु गोला का नाश होता है।

९—हरीतकी, जवाखार, काला नमक, अजवाइन, सेंधा नमक समान मात्रा में लेकर चूर्ण तैयार करें। चार माशे की मात्रा में सेवन करें। इससे गुल्म रोग का नाश होता है।

१०—वच दो भाग, विड नमक तीन भाग, सोंठ चार भाग, जीरा पाँच भाग, हरीतकी छः भाग, भुनी हींग छः भाग, पुष्कर मूल ७ भाग लेकर चूर्ण तैयार करें। छः माशे की मात्रा में सेवन करें। यह गुल्म रोग का नाश करने के लिए अति उत्तम दवा है।

हृद्-रोग

१—शुद्ध घी में सहिजन की पत्तियों को भून कर खाने से हृदय की पीड़ा शान्त होती है।

२—मूँग घी में भून कर मिश्री मिलाकर सेवन करने से हृदय की शक्ति बढ़ती है।

३—कूट के बीज मिश्री के साथ पीस कर सेवन करने से हृदय बलवान होता है।

४—खस और पिपरामूल का चूर्ण शुद्ध घी के साथ चाटने से हृदय का शूल बन्द हो जाता है।

५—गेहूँ का चूर्ण और अर्जुन वृक्ष की छाल का चूर्ण गुड़ और घी में मिलाकर चाटने से और ऊपर से गाय का दूध पीने से हृद्रोग समूल नष्ट हो जाता है।

६—अर्जुन वृक्ष की छाल कूट कर आधा सेर जल में काढ़ा तैयार करें। आधा पाव शेष रहे तो उतार कर सेवन करें। उसमें घी पका कर सेवन करें। इससे हृदय रोग शान्त होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

७—अर्जुन वृक्ष की छाल दूध में पकाकर सेवन करने से हृदय रोग का नाश हो जाता है।

८—बहेड़ा और अश्वगंधा का चूर्ण समान भागों में लेकर गरम जल के साथ सेवन करने से हृदय के रोग नष्ट होते हैं।

९—मधु के साथ अगर का चूर्ण सेवन करने से हृदय बलवान् होता है।

१०—फालसा के शरबत में मिश्री मिलाकर पीने से हृदय बलशाली होता है।

११—देवदारु के काढ़े में मधु मिलाकर पीने से हृदय के रोग नष्ट होते हैं।

१२—जटामांसी पीसकर छाती पर लगाने से धड़कन बन्द हो जाती है।

१३—मेथी के काढ़े में मधु मिलाकर सेवन करने से भयंकर हृद्रोग नष्ट होता है।

शोथ और फोड़ा

१—सूखा करेला सिरके में पीसकर गरम करके लेप करने से गले की सूजन मिट जाती है।

२—चौराई की पत्तियों की पुल्टिस बाँधने से फोड़ा पककर अच्छा हो जाता है।

३—ढाक की छाल का रस निकालकर तुरन्त लेप कर देने से फोड़ा फूट कर बह जाता है।

४—केले की पत्तियों को पीसकर तेल में पुल्टिस बनाकर बाँध रखने से घाव की कीड़ियाँ मर जाती हैं।

५—गदहपूरैना के काढ़े में सोंठ और चिरायता का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से सर्वाङ्ग का शोथ रोग शान्त हो जाता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

६—गुदा के शोथ में गुलरोगन की मालिश करना लाभदायक है।

७—जलकुम्भी का भस्म गोमूत्र में मिलाकर सेवन करने से गले का शोथ दूर होता है।

८—घी में आँवले का रस मिलाकर सेवन करने से शोथ रोग नष्ट होता है।

९—गाय या भैंस के दूध में त्रिफला का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से उदर का शोथ रोग मिटता है।

१०—नागफनी की पत्तियों में सरसों का तेल चुपड़कर बाँधने से गठिया का शोथ अच्छा होता है।

११—फालसा का पत्ता सेंककर बाँध रखने से फोड़ा फटकर बह जाता है।

१२—नीम की पत्तियाँ घी में जलाकर उसमें मोम मिलाकर मलहम तैयार करें। इसको लगाने से फोड़े का घाव भर जाता है।

१३—लहसुन मिश्रित सरसों या राई का तेल लगाने से शोथ के फोड़े की कृमि मर जाती है।

१४—सहिंजन की छाल और राई पीस कर लेप करने से कान की जड़ की सूजन अच्छी हो जाती है।

श्लीपद-रोग

१—गुड़ संयुक्त हलदी-चूर्ण गोमूत्र के साथ सेवन करने से श्लीपद, दाद, कुष्ठ प्रभृति रोग दूर होते हैं।

२—गुरुच के रस में गोमूत्र मिलाकर प्रतिदिन सेवन से श्लीपद रोग का नाश होता है।

३—श्वेत मँदार का मूल और उसकी छाल काँजी में पीसकर प्रलेप देने से श्लीपद रोग में विशेष उपकार होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

४—हरड़ की छाल रेंडी के तेल में भून कर गोमूत्र के साथ सेवन करने से श्लीपद रोग का दमन होता है।

५—सोंठ का चूर्ण गोमूत्र के साथ सेवन करने से श्लीपद जाता रहता है।

६—बकरी के मूत्र के साथ चितामूल, देवदारु अथवा श्वेत सरसों और सहिंजन की छाल पीस कर जरा गरम करके प्रलेप देने से श्लीपद रोग में विशेष उपकार होता है।

७—देवदारु और हल्दी का चूर्ण गोमूत्र के साथ सेवन करने से श्लीपद रोग दूर होता है।

८—विधारा मट्ठे में पीस कर नियम से सेवन करने से श्लीपद रोग का नाश होता है।

९—हरड़ का चूर्ण गोमूत्र में मिलाकर विधिपूर्वक कुछ दिन पीने से श्लीपद रोग से मुक्ति मिलती है।

१०—धतूरे का बीज, एरण्डमूल, निर्गुण्डी, पुनर्नवा का मूल, सहिंजन की छाल और सरसों शीतल जल में पीस कर लेप करने से भयंकर श्लीपद भी आरोग्य होता है।

११—नमक का बफारा पैरों में लेने से श्लीपद में उपकार होता है।

१२ भटकटैया, पुनर्नवा, मुलेठी, रासन, मँजीठ काँजी में पीसकर लेप करने से श्लीपद रोग का नाश होता है।

१३—एक तोला पीपल, दो तोला चीता की जड़, चार तोला दन्ती, छोटी हरड़ २० दाना और आठ तोला गुड़ मधु के साथ सेवन करने से भयंकर श्लीपद रोग का नाश होता है।

१४—खैर की छाल, नीम की छाल ६ माशे की मात्रा में लेकर गोमूत्र और मधु के साथ सेवन करने से श्लीपद रोग नष्ट हो जाता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मूत्र-कृच्छ्र रोग

१—सेंधा नमक और घीकुँवार का गूदा समान परिमाण में सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र रोग दूर होता है।

२—आँवला का काढ़ा गुड़ मिलाकर सेवन करने से यह युक्त मूत्र कृच्छ्र दूर होता है।

३—अर्जुन वृक्ष का काढ़ा पीने से मूत्रकृच्छ्र में लाभ होता है।

४—मधु और ईख का रस पीने से मूत्रकृच्छ्र रोग का नाश होता है।

५—ककड़ी की पत्तियों के काढ़े में जवाखार मिलाकर पीने से मूत्र कृच्छ्र का नाश होता है।

६—कायफल के काढ़े में जवाखार मिलाकर सेवन करने से मूत्र कृच्छ्र नष्ट होता है।

७—इन्द्रयव की छाल पीसकर दूध के साथ पीने से मूत्र की कड़क अच्छी होती है।

८—मिश्री के साथ बड़ी इलायची के बीजों को चूर्ण मिलाकर सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र रोग नष्ट होता है।

९—भटकटैया का रस एक तोला मधु के साथ सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र में उपकार होता है।

१०—धुरैया की छाल का चूर्ण गाय के दूध में मिलाकर पीने से मूत्र कृच्छ्र रोग का नाश होता है।

११—खस की जड़ का काढ़ा पीना मूत्रकृच्छ्र रोग में लाभ-दायक है।

१२—दूध औंट कर उसमें गुड़ मिलाकर पीने से मूत्र कृच्छ्र रोग दूर होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

१३—गुरुच का रस सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र रोग शान्त होता है।

१४—एक पाव जल में दो तोला गेहूँ भिगोकर सारी रात छोड़ दें। प्रातःकाल उसका स्वच्छ जल सेवन करें। इस उपचार से मूत्र-कृच्छ्र रोग का नाश होता है।

१५—गोखरू के काढ़े में जवाखार मिलाकर सेवन करने से भयंकर मूत्रकृच्छ्र रोग दूर होता है।

१६—चम्पा फूल का शरबत पीने से मूत्रकृच्छ्र शान्त होता है।

१७—चौराई की जड़ पीसकर पीने से मूत्रकृच्छ्र रोग का शमन होता है।

१८—जवाखार और मिश्री दूध में मिलाकर सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र रोग नष्ट होता है।

१९—गोखरू जवाखार का चूर्ण मट्ठे में मिलाकर पीने से मूत्र-कृच्छ्र रोग जड़ से नष्ट होता है।

२०—तरबूजे की मींगी पीसकर शरबत तैयार करें उसमें मिश्री मिलाकर सेवन करें। इस उपचार से पेशाब खुलकर होने लगता है।

२१—तेजपात की छाल पीसकर पीने से मूत्रकृच्छ्र दूर होता है।

२२—दूध में पानी मिलाकर पीने से मूत्र खुल कर होता है।

२३—गाय के गर्म दूध में गुड़ मिलाकर पीने से मूत्रकृच्छ्र रोग दूर होता है।

२४—गोल मिर्च के साथ दूब पीसकर सेवन करने से पेशाब की रुकावट मिटती है।

२५—निर्मली के बीज दूध के साथ सेवन करने से मूत्र की कृच्छ्रता मिट जाती है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

२६—फालसा की पत्तियों का चूर्ण दो तोला रात भर पानी में भिगो रखें। प्रातःकाल उसका स्वच्छ जल पीने से मूत्रकृच्छ्र आरोग्य होता है।

२७—फिटकिरी का चूर्ण एक माशा १ पाव दही में मिलाकर पीने से मूत्रकृच्छ्र रोग नष्ट होता है।

२८—कच्चा मोथा पीसकर शरबत बनाकर पीने से मूत्रकृच्छ्र रोग दूर होता है।

२९—रीठा रात भर भिगोकर प्रातःकाल छान कर पीने से मूत्र-कृच्छ्र शान्त होता है।

३०—शीतल चीनी का चूर्ण दूध के साथ पीने से मूत्रकृच्छ्र रोग का नाश होता है।

३१—गोल मिर्च और पुनर्नवा की पत्तियां को पीसकर पीने से मूत्रकृच्छ्र रोग नष्ट होता है।

३२—सिरस की पत्तियों को पीसकर पीने से मूत्र की रुकावट मिटती है।

३२—हल्दी, आँवला और चीनी का चूर्ण शीतल जल के साथ सेवन करने से एक सप्ताह के भीतर मूत्रकृच्छ्र रोग का नाश होता है।

मूत्राघात

१—अनार का रस, कमल का रस, जवाखार और मिश्री के साथ पीने से मूत्राघात का दमन होता है।

२—बेदाने के लुआब में मिश्री और दूध मिलाकर पीने से मूत्रा-घात निर्मूल हो जाता है।

३—केसर के काढ़े में मधु मिलाकर सेवन करने से मूत्राघात रोग का दमन होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

४—लिंग के छेद में कपूर का चूर्ण प्रवेश करा देने से मूत्राघात दूर होता है।

५—ताजा दूध और ताजा जल सम परिमाण में मिलाकर पीने से मूत्राघात अच्छा होता है।

६—तीसी पीसकर पेडू पर लेप करने से मूत्राघात का नाश होता है।

७—गोखरू के पंचांग का काढ़ा तैयार कर उसमें कलमी शोरा, जवाखार मधु और शक्कर मिला दें। इसका सेवन करने से मूत्राघात में विशेष लाभ होता है।

८—चावल के धोवन में चन्दन पीसकर मिला दें, फिर अल्प शक्कर मिलाकर सेवन करें। इस उपचार से मूत्राघात की शिकायत दूर होती है।

अश्मरी (पथरी) रोग

१—एक तोला तीसी एक छटाँक गरम जल में भिगोकर सारी रात छोड़ दें। प्रातःकाल छानकर पीने से पथरी रोग का नाश होता है।

२—पका केला, दूध, खजूर वृक्ष की जड़ इन्हें समान भागों में लेकर सब समेत दो तोला रखकर पीस डालें। प्रतिदिन प्रातःकाल सेवन करने से अश्मरी आदि रोग नष्ट होते हैं।

३—गोखरू का चूर्ण मधु के साथ चाटकर ऊपर से बकरी का ताजा दूध पीने से अश्मरी रोग समूल नष्ट होता है।

४—सहिंजन का रस दूध में मिलाकर सेवन करने से पथरी की निवृत्ति होती है।

५—बला की छाल का काढ़ा पकाकर उसमें पुराना गुड़ मिलाकर सेवन करने से पथरी रोग से छुटकारा मिलता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

७—जवाखार, बकायन की पत्तियों के रस में मिलाकर पीने से अश्मरी रोग का नाश होता है।

८—पालकी का ताजा रस पीने से पथरी रोग से पिण्ड छूट जाता है।

९—मूली की पत्तियों के रस में अजमोद पीसकर पीने से पथरी का नाश होता है।

१०—भेड़ी के दूध में मधु और सतावर मिलाकर सेवन करने से पथरी रोग का नाश होता है।

प्रमेह-रोग

१—शिलाजीत पाँच रत्ती मधु के साथ दिन में दो बार सेवन करने से प्रमेह में विशेष उपकार होता है।

२—आँवला का रस आधा छटाँक, साफ चीनी आधी छटाँक एक साथ सेवन करने से प्रमेह में उपकार होता है।

३—गाय का कच्चा दूध एक पाव एक सेर जल में मिलाकर पीने से प्रमेह दूर होता है।

४—प्रतिदिन कुछ मधु के साथ कच्चे आँवले का रस दो तोला सेवन करने से प्रमेह रोग में उपकार होता है।

५—दूध, चीनी, शतमूली का रस समान भागों में लेकर सेवन करने से सब प्रकार के प्रमेह रोग नष्ट होते हैं।

६—शोधित गन्धक, लौह सम परिमाण में लेकर घृतकुमारी के रस में रगड़ें। तीन रत्ती की मात्रा में प्रतिदिन सेवन करें। इससे प्रमेह आदि रोगों का नाश होता है।

७—हल्दी का चूर्ण दो आना, कच्चे आँवले का रस एक में मिलाकर किंचित् मधु का प्रक्षेप देकर सेवन करने से प्रमेह आदि रोगों का नाश होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

८—बरगद की जटा का काढ़ा तैयार कर उसमें अल्प मात्रा में मधु मिलाकर नियमपूर्वक सेवन करने से प्रमेह रोग से छुटकारा मिलता है।

६—आँवला का रस निकाल कर उसमें कुछ मधु मिला लें। नियम के साथ प्रतिदिन सेवन करें। अवश्य ही प्रमेह रोग का नाश हो जायगा।

१०—गूलर कच्चे तोड़ कर उसकी तरकारी पकाकर कुछ दिन सेवन करने से जल प्रमेह से मुक्ति मिलती है।

११—सौंफ के रस में धतूर के बीज और गोल मिर्च पीसकर जल के साथ सेवन करें। कुछ ही दिनों में भयंकर प्रमेह रोग का नाश हो जायगा।

१२—निर्मली के बीज एक तोला मट्ठे के साथ पीसकर मधु मिलाकर सेवन करना प्रमेह रोग को दूर करता है।

१३—हरीतकी का चूर्ण मधु के साथ सेवन करने से प्रमेह रोग का नाश होता है।

१४—भुनी हुई फिटकिरी और गेरू समान भागों में लेकर चूर्ण बना लें फिर उसमें मिश्री मिला दें। सवा तोला की मात्रा में सेवन करने से प्रमेह रोग से मुक्ति मिलेगी।

१५—सेवार का भस्म सम-परिमाण में चीनी मिलाकर सेवन करने से प्रमेह रोग का शमन होता है।

१६—हरसिंगार की पत्तियों का काढ़ा लगातार कुछ दिन सेवन करने से जल-प्रमेह का नाश होता है।

१७—चीनी और बर का दूध समान परिमाण में एक में मिला कर कुछ दिन विधिपूर्वक सेवन करने से प्रमेह रोग का नाश होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सूजाक

१—वटवृक्ष की जटा संग्रह कर कूटकर आधा सेर जल में काढ़ा पकाइये। जब आधा पात्र शेष रहे तो उसमें बर का दूध एक-दो तोला मिला दें। लगातार कुछ दिनों तक प्रातःकाल सेवन करें। सूजाक रोग से त्राण मिलेगा।

२—शुद्ध शिलाजीत का सेवन करने से सूजाक के कष्ट से मुक्ति मिलती है।

३—पेट में कब्ज की शिकायत न रहे अर्थात् पहले कोष्ठबद्धता दूर करके त्रिफला दूध की लस्सी के साथ सेवन करें। सूजाक के कष्ट से रक्षा हो जायगी।

४—चन्दन का तेल सूजाक में लाभदायक होता है।

५—चन्दन का चूर्ण, गेरू का चूर्ण, शुद्ध फिटकिरी का चूर्ण शीतल जल के साथ सेवन करने से सूजाक से त्राण मिलता है।

६—निर्मली शीतल जल के साथ निगल जाने से सूजाक रोग से त्राण मिलता है।

स्वप्नदोष-रोग

१—स्वप्न-दोष के रोगी को रात्रि का भोजन हलका करना चाहिये दीर्घ भोजन हानिकारक होता है।

२—सोने के पूर्व हाथ मुँह और विशेष रूप से पैर के तलवों को शीतल जल से अच्छी तरह धो लेना चाहिये।

३—एकाग्रचित्त से ईश्वर का स्मरण करके शयन करना चाहिये।

४—असगंध, मुसली, शतावर और मिश्री का चूर्ण दूध में मिलाकर मथनी से मथ डालें। फेन निकलने लगे तब पत्थर की कटोरी या

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

काँच के गिलास में लेकर नित्य प्रातःकाल और सायंकाल पीना चाहिये। कुछ दिनों के उपचार से इस रोग से मुक्ति मिल सकती है।

५—गुरुच का सत, शीतलचीनी, बेदाना और मिश्री एक में मिलाकर गाय के दूध के साथ नियम-पूर्वक सेवन करने से स्वप्नदोष का रोग दूर हो जाता है।

६—सौंफ, मिश्री, ब्राह्मी, गदहपूरना—इनका चूर्ण बनाकर गाय के दूध के साथ सेवन करने से स्वप्न-दोष से त्राण मिलता है।

७—त्रिफला मधु के साथ सेवन करने से स्वप्न-दोष शान्त होता है।

८—वरिअरा की जड़ की छाल एक तोला की मात्रा में लेकर गाय के दूध में मिलाकर सेवन करने से स्वप्नदोष रोग से छुटकारा मिलता है।

९—लाल मिर्च, खटाई, कड़ू तेल, बाजार की पूड़ी-कचौड़ी, अत्यधिक घी, भैंस का दूध आदि कुपथ्यों से बचना चाहिये।

बहुमूत्र रोग

१—बड़ी इलायची और सोंठ दो-दो आने की मात्रा में और अनार का रस एक छटांक एक में मिलाकर नित्य सेवन करना चाहिये। इस उपचार से बहुमूत्र रोग का नाश होता है।

२—मोती का भस्म चार रत्ती, बेदाना का रस आधा तोला लेकर एक में मिलाकर अच्छी तरह रगड़िये। फिर इसे सेवन करें। बहुमूत्र रोग दूर हो जायगा।

३—सिंघाड़ा का चूर्ण एक तोला लेकर बकरी के दूध के साथ नित्य सेवन करने से मूत्रातिसार नष्ट होता है।

४—निर्मली का काढ़ा नियम के साथ कुछ दिन सेवन करने से बहुमूत्र रोग का नाश होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

५—आँवले का स्वरस एक तोला, मधु चार माशे, शक्कर चार माशे, एक पाव दूध और एक केला सब मिलाकर सेवन करने से बहुमूत्र रोग से छुटकारा मिलता है।

६—आँवले के स्वरस में मधु मिलाकर सेवन करने से बहुमूत्र रोग दूर होता है।

७—पके बेल में मधु मिलाकर सेवन करने से बहुमूत्र रोग नष्ट होता है।

८—पका केला, शतावरी और विदारीकंद गाय के दूध के साथ सेवन करने से बहुमूत्र रोग नष्ट होता है।

९—दो रत्ती वङ्ग भस्म, चार आने की मात्रा में मधु के साथ अच्छी तरह रगड़ कर सेवन करने से बहुमूत्र रोग नष्ट होता है।

उपदंश (गरमी)

१—त्रिफला के क्वाथ से बार-बार इन्द्रिय को धोना चाहिये।

२—जुलाब लेकर कोठे को साफ कर लेना चाहिये। तब औषधि सेवन करनी चाहिये। शरीर को वायु के झोंके से बचाना चाहिये।

३—विरेचक औषधि सेवन के बाद तुरन्त स्नान करना निषिद्ध है। सोना भी हानिकारक है।

४—मूंग की दाल की पतली खिचड़ी ही भोजन करना चाहिये।

५—प्याज, लहसुन, गरम मसाले से बनी तरकारियाँ, मांस-मछली आदि त्याज्य हैं। लाल मिरचा, खटाई, कड़ू तेल त्याग ही देना चाहिये।

६—त्रिफला समान भागों में लेकर मधु के साथ पकाकर उपदंश पर प्रलेप देना चाहिये।

७—लघु भोजन करना चाहिये। मूत्र का वेग न रोकना चाहिये।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मैथुन निषिद्ध है। अति परिश्रम न करें। गुड़ और गरम चीजें सभी त्याग दें।

८—बबूल की सूखी पत्तियों का चूर्ण, अनार के छिलके का चूर्ण लगाने से उपदंश व्रण अच्छे हो जाते हैं।

९—चोप चीनी मधु के साथ सेवन करने से उपदंश रोग का नाश होता है।

१०—नीम के फूल, खैरखार और त्रिफला का काढ़ा पीने से उपदंश रोग नष्ट होता है।

११—सुपारी और कनेर की छाल का बाह्य प्रयोग करने से उपदंश रोग नष्ट होता है।

१२—त्रिफला समान भागों में लेकर कड़ाही में भस्म कर लेना चाहिये। यह भस्म खूब बारीक महीन होना चाहिये। इसी भस्म में मधु मिलाकर इन्द्रिय पर लेप करने से उपदंश का घाव सूख जाता है।

१०—भँगरैया (भृंगराज) का रस निकाल कर उससे इन्द्रिय पुनः पुनः धोना चाहिये।

११—मधु और रसौत एक में मिलाकर इन्द्रिय पर लेप करना लाभदायक होता है।

१२—मँदार, अपामार्ग, भारंगी, हिंगुल बेर के वृक्ष की छाल समान भागों में लेकर धूप देने से गरमी (उपदंश) की बीमारी शान्त होती है।

१२—छोटी इलाइची, कपूर, रसकपूर, सफेद कत्था और त्रिफला की राख सौ बार धोये हुए गाय के घी में मिलाकर लेप करने से उपदंश का घाव नष्ट होता है।

कंठमाला

१—अनन्तमूल की जड़ पीसकर बासी पानी के साथ पीने से कंठमाला रोग का शमन होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

२—श्वेत विष्णुक्रान्ता की जड़ पीस कर घी में मिलाकर सेवन करने से गलगंड नष्ट होता है।

३—त्रिफला से भिगोये जल में त्रिफला भिगोकर रात भर छोड़ दें। प्रातःकाल उसी जल में एरण्ड की जड़ पीस कर क्षत स्थान पर लेप करने से उपदंश में उपकार होता है।

४—गेंदे की पत्ती गोमूत्र में पीस कर लगाने से लाभ होता है।

५—कंठमाला रोग में पेट की शुद्धि करके रक्त-शोधन की औषधि सेवन करना आवश्यक होता है।

६—लहसुन और सूरजमुखी की पुल्टिस बाँधने से कंठमाला रोग शान्त होता है।

७—जलकुम्भी का भस्म गोमूत्र के साथ नित्य सेवन करने से कंठमाला रोग दूर होता है।

८—गेंदे की पत्ती, नीम की पत्ती, और कचनार की छाल समान भागों में लेकर गोमूत्र में पीस डालें। इसका लेप करने से कंठमाला रोग शान्त होता है।

व्रणरोग

१—धनियाँ, लोध और वच समान भागों में लेकर चूर्ण तैयार करें। बादाम के दूध में यही चूर्ण मिलाकर व्रण के मुंह पर लेप करें। इस उपचार से व्रण आरोग्य होता है।

२—दूब या लाल चन्दन या मुलेठी पीस कर व्रण पर लगाने से व्रणशोथ आरोग्य होता है।

३—बेल की पत्तियों को पीस कर व्रण स्थान पर लगाना चाहिये। इससे उपकार होता है।

४—ककही की पत्तियों को पीस कर घाव पर लगाने से घाव भरने लगता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

५—मोम और कत्थे का मलहम तैयार कर लगाने से पीब से भरा घाव अच्छा हो जाता है।

६—बाकुची की मींगी गूलर के दूध में पीस कर लेप देने से फोड़ा आरोग्य होता है।

७—बेर की छाल पीस कर लगाने से घाव भर जाता है।

८—हींग सिरके में पीस कर गरम करके लगाने से नासूर अच्छा होता है।

९—मिर्च और गोरोचना एक साथ पीस कर व्रण पर प्रलेप देने से उपकार होता है।

१०—मसूर की दाल और कपूर एक में पीस कर व्रण पर लेप करने से व्रण रोग नष्ट होता है।

११—नीम की पत्ती और बेर की पत्ती एक साथ पीसकर लेप करने से नासूर का घाव अच्छा होता है।

१२—गूलर की पत्तियों को पीसकर लगाने से टूटी हुई हड्डी जुट जाती है।

१३—गुरुच और हलदी समान भागों में लेकर तेल में छोड़ दें और वही तेल धीमी आँच से पकाकर घाव पर लगायें। इससे नासूर अच्छा हो जाता है।

१४—शस्त्र से कटे घाव पर ककही का रस डालने से या उसे पीसकर लगाने से रक्त बहना रुक जाता है और घाव भर जाता है।

१५—धतूर की पत्ती पीसकर कटे स्थान पर लगाने से रक्त निकलना बन्द होता है।

१६—अपामार्ग की जड़ पीसकर घाव पर लगाने से रक्त निकलना बन्द होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अण्डकोश वृद्धि

१—देवदारु का काढ़ा तैयार कर उसमें गोमूत्र मिलाकर सेवन करने से अण्डकोश की वृद्धि रुक जाती है।

२—गाय के शुद्ध घी में सेंधा नमक मिलाकर नित्य सेवन करने से अण्डकोश की वृद्धि का शमन होता है।

३—गोलमिर्च और जीरा जल में पीसकर लेप करने से अण्डकोश वृद्धि के कष्टों से छुटकारा मिलता है।

४—सेंधा नमक और हरड़ का चूर्ण तैयार कर रख लें। रेंड़ी के तेल में गोमूत्र मिला लें। उसी तेल में उक्त चूर्ण पकाकर सेवन करें। अण्डकोश की वृद्धि का दमन होता है।

५—माजूफल के साथ असगंध मिलाकर पानी में पीस डालें। इसका लेप करने से अण्डकोश की वृद्धि रुक जाती है, दर्द भी दूर होता है।

६—कपास की मींगी और सोंठ पानी में पीसकर लगाने से अण्ड-कोश का बढ़ना रुक जाता है।

७—गंधबिरोजा पीसकर बढ़े हुए अण्डकोश पर लेप करने से विशेष लाभ होता है।

८—हलदी और ऊँट की लीद पानी में पकाकर गाढ़ा करें। यही बढ़े हुए अण्डकोश पर लेप करें। इस उपचार से अण्डकोश की वृद्धि बन्द हो जाती है। वेदना की भी शान्ति होती है।

कुष्ठ-रोग

१—नीम की कोमल पत्तियों को पीसकर कुछ दिनों तक नियम पूर्वक सेवन करने से कुष्ठ रोग से त्राण मिलता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

२—मधु के साथ नौसादर मिलाकर लगाने से श्वेत कुष्ठ रोग से मुक्ति मिलती है।

३—नौसादर विशुद्ध मधु में फेटकर लगाने से श्वेत कुष्ठ का नाश होता है।

४—धनियाँ पीसकर शरीर पर मालिश करने से चर्मरोग का नाश होता है।

५—अर्जुन वृक्ष के तेल में चून का पानी मिलाकर लगाने से कुष्ठ का नाश होता है।

६—नौसादर तेल में गला कर लेप करने से श्वेत कुष्ठ का नाश होता है।

७—उबटन में फिटकिरी का महीन चूर्ण मिलाकर मालिश करने से चर्म रोग नष्ट होता है।

८—नागकेसर का तेल मलने से चर्म रोग की निवृत्ति होती है।

९—सिरस की एक तोला पत्ती लेकर गोल मिर्च के साथ सेवन करने से श्वेत कुष्ठ का नाश होता है।

१०—हल्दी के चूर्ण में गुड़ मिलाकर प्रातःकाल और सन्ध्या को सेवन करने से चर्म रोग का नाश होता है।

११—सारिवा और जलनीम का चूर्ण एक तोला की मात्रा में लगातार तीन सप्ताह तक नियमपूर्वक सेवन करने से सब प्रकार के चर्म रोगों का उन्मूलन होता है।

१२—कनेल की छाल पीस कर लेप करने से गज चर्म और श्वेत कुष्ठ से त्राण मिलता है।

१३—नमक का सेवन बन्द कर बकुची का चूर्ण और भाँगरा गर्म जल के साथ पीना चाहिये और साथ ही २१ दिनों तक दोनों को पीस कर लेप करना चाहिये। इस उपचार से कुष्ठ रोग से निवृत्ति होती है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

भगन्दर-बवासीर

१—मजीठ, तेउड़ी, तिल इन्हें समान भागों में लेकर जल के साथ पीस डालें। अनन्तर कुछ मधु, घी और सेंधा नमक मिलाकर लेप करें। इस उपचार से भगन्दर रोग का नाश होता है।

२—चीत की जड़, जमालगोटा की जड़ और अतीस त्रिफला के रस में पीस कर लेप करने से भगन्दर रोग का नाश होता है।

३—वट वृक्ष की कोमल पत्तियाँ, गुरुच, गदहपूरना सोंठ, ईंट का चूर्ण सबको पीस कर लगाने से भगन्दर का नाश होता है।

४—एक तोला चीनी, और आधा तोला हरीतकी (हरड़) का चूर्ण एक साथ जल में मिलाकर रात के समय सोने के पहले सेवन करें। अर्श रोग दूर हो जायगा।

५—लालचन्दन का चूर्ण दो आना, तिल एक आना जल के साथ पीस कर सेवन करने से अर्श रोग का नाश होता है।

६—छोटी करैली का रस सेवन करने से भी अर्श रोग का नाश होता है।

७—मँजीठ, तेउड़ी, तिल इन्हें समान भागों में लेकर, जल के साथ पीस डालें। फिर कुछ मधु, घी, सेंधा नमक मिलाकर मस्सों पर चारों तरफ प्रलेप करें। इससे कुछ ही दिनों में भगन्दर आरोग्य हो जायगा।

८—अनन्तमूल, नीम का पंचांग (फल, फूल, पत्ती, छाल, मूल) और त्रिफला का सेवन करने से भगन्दर रोग का नाश होता है।

९—कुत्ते की हड्डी त्रिफला के रस में पीस कर लेप करने से भगन्दर दूर होता है।

१०—गृहधूम, लोध, वच और दारु हल्दी पीस कर लेप करने से भगन्दर की निवृत्ति होती है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

११—सूरन की तरकारी घी में पकाकर खाने से खूनी अर्श का नाश होता है।

१२—इन्द्रयव का चूर्ण छः माशे की मात्रा में लेकर उसमें मधु मिलाकर सेवन करने से खूनी बवासीर का नाश होता है।

१३—मूली की पत्तियों को छाया में सुखाकर चूर्ण तैयार करें। समान चीनी मिलाकर एक तोला की मात्रा में ४० दिन तक लगातार सेवन करें। अर्शरोग का नाश होगा।

१४—सहिंजन की जड़ की छाल और मँदार की पत्तियाँ एक में पीसकर लेप करने से अर्श रोग का दमन होता है।

१५—त्रिफला और मिश्री समान मात्रा में लेकर चूर्ण तैयार करें। गुलाब जल मिलाकर छः माशे की मात्रा में गोलियाँ तैयार करें। इसका नियम से सेवन करें। अर्श रोग छूट जायगा।

१६—नीबू का रस तीन माशे लेकर दूध में मिलाकर पीने से खूनी बवासीर का नाश होता है।

१७—प्याज के रस में मिश्री मिलाकर पीने से खूनी अर्श का नाश होता है।

१८—तिल के चूर्ण में मक्खन मिलाकर छः माशे की मात्रा में सेवन करने से खूनी अर्श का नाश होता है।

१९—गूलर का दूध शीतल जल में मिलाकर पीने से अर्श रोग छूट जाता है।

पाण्डु-कामला

अधिक परिमाण में नमक, मदिरा, लाल मिर्च आदि उष्ण वीर्य पदार्थों का सेवन करने से और अतिरिक्त मैथुन व्यायाम से यह रोग उत्पन्न होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

१—हरड़, आँवला, बहेड़ा, हल्दी, सोंठ, गुरुच, मोथा, विड़ंग, इन्द्रयव, पीपल, मिर्च इनका काढ़ा बना कर सेवन करने से पाण्डु रोग नष्ट होता है।

२—सोंठ, पीपल, गोल मिर्च इनका चूर्ण नीबू के साथ सेवन करने से वातज पाण्डु का नाश होता है।

३—हरड़ गोमूत्र में पीस कर सेवन करने से कफज पाण्डु रोग नष्ट होता है।

४—सोंठ का चूर्ण दूध के साथ सेवन करने से कामला रोग नष्ट होता है।

५—हल्दी का चूर्ण दही के साथ सेवन करने से कामला रोग नष्ट होता है।

६—हरड़, आंवला, बहेड़ा, दारुहलदी नीम की छाल, इनका काढ़ा मधु के साथ सेवन करने से रोग नष्ट होता है।

७—आँवला, लौह, सोंठ, पीपल, मिर्च, हलदी इन्हें एकत्र कर मधु के साथ सेवन करने से कामला रोग का नाश होता है।

८—नित्य गुड़ के साथ हरड़ सेवन करने से पाण्डु रोग आरोग्य होता है।

९—घी और चीनी के साथ त्रिफला का काढ़ा पीने से वातज पांडु रोग नष्ट होता है।

१०—गुरुच की पत्ती मट्ठे के साथ पीस कर सेवन करने से कामला रोग नष्ट होता है।

११—दो तोला चीनी के साथ १० माशे तेउढ़ी चूर्ण मिलाकर सेवन करने से पाण्डु रोग का नाश होता है।

१२—हरड़ गोमूत्र में भिगो रखें। फिर उसे ही गोमूत्र में पीस कर गोमूत्र में फेट कर सेवन करें। पाण्डु रोग दूर होगा।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

१२—आँवला, हरड़, वहेडा, गुरुच, वासक, चिरायता, नीम की छाल समान भागों में लेकर आधा सेर जल में औंट डालें। आधा पाव शेष रहे तो उतार कर मधु मिलाकर सेवन करें। इससे पाण्डु रोग और कामला भी अच्छा हो जायगा।

१३—घीकुआर के रस में पुराना घी मिलाकर सूँघने से कामला रोग का नाश होता है।

१४—गाय के दूध में सोंठ का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से कामला रोग नष्ट होता है।

१५—नींवू का रस आँख में लगाने से कामला और पाण्डु रोग का नाश होता है।

१६—दारु हलदी का चूर्ण मकोय के काढ़े में मिलाकर सेवन करने से कामला रोग का नाश होता है।

१७—गाय के चार तोला दही के साथ हलदी का चूर्ण एक तोला सेवन करने से कामला और पाण्डु रोग नष्ट होते हैं।

१८—घी में सोंठ का चूर्ण पकाकर सेवन करने से कामला-पांडु रोग नष्ट होते हैं।

१९—हींग पीस कर नेत्रों में आँजन करने से कामला रोग का नाश होता है।

२०—मेंहदी की पत्तियों को पानी में भिगो कर रात भर छोड़ दें। प्रातःकाल वही जल छान कर पी जायें। पाण्डु और कामला रोग निर्मूल हो जायगा।

२१—कपास के बीज एक तोला की मात्रा में लेकर जल में भिगो रखें। सारी रात रहने दें। सबेरे छान कर उस जल में सेंधा नमक मिलाकर सेवन करें। पाण्डु रोग का नाश हो जायगा।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

२२—कुलथी का चूर्ण एक तोला और शक्कर एक तोला एक में मिलाकर पुराने गुड़ के साथ सेवन करने से पाण्डु रोग का नाश होता है।

२३—गुरुच के काढ़े में मधु मिलाकर सेवन करने से पाण्डु रोग का नाश होता है।

कृमि-रोग

१—आधा तोला पलाश-बीज चूर्ण अल्प मधु के साथ मिलाकर सेवन करने से सब प्रकार के कृमि रोग-नष्ट होते हैं।

२—प्रतिदिन भोर में अल्प मधु के साथ सेम-पत्तों का रस सेवन करने से कृमियों का नाश होता है।

३—गाजर खाने से कृमि-रोग में उपकारी होता है।

४—पलाश के बीजों का चूर्ण मट्ठे में मिलाकर पीने से कृमि का नाश हो जाता है।

५—नारंगी के डेढ़ तोले छिलके का काढ़ा पकाकर भुनी हींग मिलाकर सेवन करने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

६—बच्चे के पेट के कीड़ों को नष्ट करने के लिए नारियल का तेल पिलाना चाहिये। मात्रा विचार कर दें।

७—बकायन की पत्तियों का सवा तोला रस पीने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

८—बथुआ का रस डेढ़ तोला लेकर उसमें नमक मिलाकर पीने से पेट के कीड़ों का नाश होता है।

९—स्याहजीर का काढ़ा पीना कृमि रोग का नाशक है।

१०—भुनी हुई हींग के साथ बच का चूर्ण मिलाकर खाने से पेट के कीड़ों का नाश होता है।

५

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

११—मोथा का चूर्ण नौ माशे लेकर मधु के साथ चाटने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

१२—सहिजन के फूलों को भूनकर खाने से पेट के कीड़ों का नाश होता है।

१३—गरम जल के साथ दो आने मात्रा में सेंधा नमक सेवन करने से कृमि रोग में उपकार होता है।

१४—धतूरा के पत्तों का रस, पान का रस और कपूर एक में मिलाकर मस्तक पर लेप करने से जूँ नष्ट होती है।

१५—पलाश के बीजों का चूर्ण चार आने मात्रा में लेकर प्रतिदिन प्रातःकाल मट्ठे के साथ सेवन करने से कृमि-रोग का नाश हो जाता है।

१६—हुक्के का बासी जल एक छटाँक लेकर एक छटाँक चूने के जल के साथ पीने से कृमि-रोग दूर होता है।

१७—करैली की पत्तियों का रस गरम जल के साथ सेवन करने से कृमि-रोग में उपकार होता है।

१८—ठंडे जल के साथ दो आने की मात्रा में सेंधा नमक सेवन करने से कृमि-रोग में उपकार होता है।

क्षय—राजयक्ष्मा (तपेदिक)

१—कबूतर, बन्दर, बकरा या हरिण का मांस घी में भूनकर चूर्ण करे। बकरी के दूध के साथ इसका सेवन करने से क्षय रोग आरोग्य होता है।

२—शक्कर, मक्खन और मधु सेवन करने से क्षय रोगी के शरीर की पुष्टि होती है।

३—मिश्री ८ तोला, वंशलोचन ४ तोला, पीपल दो तोला, छोटी

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

इलायची एक तोला, दालचीनी आधा तोला सबको एक में कूट-पीस कर मधु के साथ नित्य सेवन से क्षय रोग का नाश हो जाता है।

४—क्षय रोगी को रक्त वमन होता हो तो मुलहठी और लाल चन्दन दूध में मिलाकर सेवन करना चाहिये।

५—बकरी के दूध के साथ काकगंधा का चूर्ण पकाकर सेवन करने से यक्ष्मा रोग का नाश होता है।

६—धनियाँ, पीपल, सोंठ, दशमूल तीस-तीस रत्ती की मात्रा में लेकर आधा सेर जल में काढ़ा तैयार करें। आध पाव शेष रहे तो छान कर सेवन करें। इस दवा से यक्ष्मा रोग का नाश होता है।

७—बकरी का दूध एक छटाँक और मिश्री आधा तोला प्रतिदिन सेवन करने से उत्कट यक्ष्मा रोग का नाश होता है।

८—बड़ी इलायची चार आना, दालचीनी आधा तोला, नाग केशर बारह आना, मिर्च एक तोला, सोंठ एक भरी चार आना और पीपल डेढ़ भरी एकत्र कर सबके साथ चीनी मिलाकर रख दें।

चार आने की मात्रा में सेवन करें। इससे यक्ष्मा रोग दूर होता है।

९—चीनी, मधु और मक्खन समान भागों में खाने से यक्ष्मा रोग का नाश होता है।

१०—पीपल, किशमिश, चीनी एक में मिलाकर सेवन करने से यक्ष्मा रोग आरोग्य होता है। समान भागों में रहना चाहिये।

११—बकरे के मांस के जूस के साथ पीपल का चूर्ण दस रत्ती खाने से राज रोग में विशेष लाभ होता है।

शीतला (चेचक)

हमारे देश में शीतला रोग में औषधि-सेवन का विधान प्रचलित न रहने पर भी उपचार की विधियाँ हैं। आयुर्वेद शास्त्र में औषधियाँ

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

बतायी गयी हैं और अन्य चिकित्सा-पद्धतियों में भी हैं। उनका उल्लेख न कर यहाँ कुछ सरल उपचारों का उल्लेख किया जा रहा है।

१—शुद्ध वायु का सेवन कराना चाहिये। हवन-धूप से रोगी का कमरा सुवासित रहे। कमरे में पवित्रता रहे। जूठन, गन्दगी, मल-मूत्र आदि का नाम निशान न रहे। नीम की पत्तियों से कमरे का द्वार सज्जित रहे। नीम की पत्तियाँ रोगी के बिछावन पर बिछी रहें। रोगी को हवा भी नीम की पत्तियों से ही झलना चाहिये।

२—रोगी के कपड़ों की सफाई बराबर होनी चाहिये। इन कपड़ों को नीम के साबुन से धोना चाहिये। साबुन के अभाव में नीम के पत्तों से उबाले हुए पानी से हो।

३—चेचक का विस्तार होते ही प्रतिषेधक रूप में टीका लगवाना चाहिये।

४—कण्टकारी का मूल पीसकर मिर्च के चूर्ण के साथ सेवन करने से चेचक रोग नहीं होता।

५—श्वेत चन्दन, चूना, गुग्गुल का धूप रोगी के कमरे में जलाना चाहिये।

६—सिरिस की छाल, गूलर की छाल, पीपल की छाल, वर की छाल समान भागों में लेकर पीस डालें और सौ बार धोए हुए घी के साथ मिलाकर स्फोटकों पर लेप करें। विशेष लाभ होगा।

७—करैले की पत्ती का रस एक तोला और हलदी का चूर्ण दस रत्ती एक में मिलाकर सेवन करें।

जलोदर-रोग

१—बालछड़ और सेंधा नमक सिरके में पीसकर लेप करने से जलोदर रोग का नाश होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

२—मट्ठे में नारंगी गरम करके सेवन करने से जलोदर रोग दूर होता है।

३—कुटकी का काढ़ा एक तोला की मात्रा में प्रतिदिन तीन बार सेवन करने से जलोदर रोग का नाश होता है।

४—गुड़ और हरड़ का चूर्ण खाने से जलोदर रोग दूर होता है।

६—रेंड़ी के तेल के साथ गोरख मुंडी का चूर्ण सेवन करने से जलोदर रोग का नाश होता है।

७—मूली का रस सेवन करने से जलोदर रोग में विशेष उपकार होता है।

नाक के रोग

(सर्दी-पीनस आदि)

१—पीनस रोग में—गुड़ और दही के साथ मरिच चूर्ण सेवन करने से विशेष उपकार होता है।

२—दूब का रस निकाल कर नाक से खींचकर ग्रहण करने से नाक से रक्त निकलना बन्द होता है।

३—गूमा का रस सेवन करने से सर्दी रोग से मुक्ति मिलती है।

४—जायफल का चूर्ण नाक में नस्य की तरह सूँघने से छींक के जरिये सर्दी शान्त हो जाती है।

५—कुलंजन का चूर्ण गरम जल के साथ सेवन करने से सर्दी का नाश होता है।

६—कुलंजन के चूर्ण की पोटली बाँधकर सूँघने से छींकों का प्रकोप शान्त हो जाता है।

७—गुलबनफसा के काढ़े में मधु मिलाकर सेवन करने से सर्दी का कोप शान्त हो जाता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

८—नीम की पत्ती और अजवाइन महीन पीसकर लेप करने से (जुकाम) की शिकायत दूर होती है।

९—मधु अथवा गुड़ के साथ गूलर का फल सेवन करने से नाक से निकलना बन्द हो जाता है।

१०—प्याज का रस सूँघने से नासिका का रक्तस्राव बन्द हो जाता है।

११—फूली फिटकिरी का चूर्ण पोटली में सूँघने से नाक का रक्त निकलना रुक जाता है।

१२—वच का चूर्ण पोटली बनाकर सूँघने से सर्दी का नाश होता है।

१३—गोलमिर्च एक आने की मात्रा में, और हलदी का चूर्ण उतनी ही मात्रा में लेकर गर्म दूध के साथ सेवन करने से सर्दी का नाश हो जाता है।

१४—हलदी का काढ़ा आध सेर जल में तैयार करें आध पाव शेष रहे तो उतार कर ललाट पर लेप करें। इस उपचार से जुकाम दूर होता है।

१५—दही गुड़ के साथ पीपल का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से सर्दी क नाश होता है।

१६—झाड़ंड की जड़ त्रिफला के जल के साथ सेवन करने से सर्दी का नाश होता है।

सिर के रोग

१—सोंठ पीसकर दूध में मिलाकर उसका नस्य लेने से सभी प्रकार के सिर दर्द आरोग्य होते हैं।

२—रक्तचन्दन शिशिर द्वारा पीसकर ललाट पर प्रलेप देने से उत्कट वायु जन्य सिर दर्द आरोग्य होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

३—अपराजिता की जड़ कानों में बाँधने से सिर दर्द में उपकार होता है।

४—हरिण का सींग, बकरी के दूध में घिसकर उसमें लउकी के बीज और लाल चन्दन रगड़ कर सबको एक में मिलाकर सिर दर्द में प्रलेप देना उपकारी होता है।

५—सहिंजन वृक्ष की छाल पीसकर प्रलेप देने से किसी भी कारण से उत्पन्न सिर दर्द का नाश होता है।

५—सिर दर्द में अनार की जड़ पीसकर लेप करना हितकर है।

६—लवंग के दो फूल और आधा माशा अफीम पीसकर लेप करने से सिर दर्द मिटता है।

७—छोटी इलायची के दाने खूब महीन पीसकर पुनः पुनः सूँघने से सिर दर्द दूर होता है।

८—भटकटैया के फलों का रस निकालकर सिर में लगाने से सिर की पीड़ा तुरन्त दूर होती है।

९—बिनौली की भींगी बारीक पीसकर ललाट पर लेप करने से सिर का दर्द दूर होता है।

१०—एरंड की जड़ के साथ कूट मिलाकर कांजी में पीस कर लेप करने से वायु के कारण उत्पन्न सिर दर्द मिटता है।

११—केसर खरल करके नाक से सुड़कने से अधकपारी का नाश होता है।

१२—पीपल और बच का चूर्ण सूँघने से सिर पीड़ा का शमन होता है।

१३—मांगरे के रस में गोलमिर्च पीसकर लेप करने से अधकपारी अच्छी होती है।

१४—मेंहदी की पत्ती तिल-तैल में पीसकर लेप करने से सिर पीड़ा शान्त होती है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

१५—मौलसिरी का चूर्ण नाक में नस्य की तरह सूँघने से सिर का दर्द दूर होता है।

१६—मौलसिरी के बीजों को महीन पीसकर लेप करने से सिर दर्द दूर होता है।

१७—सहिंजन की पत्तियों को पीसकर गरम करके लेप करने से सिर का दर्द मिट जाता है।

१८—सोंठ बारीक पीसकर बकरी के दूध में मिलाकर नस्य लेने से सब प्रकार के सिर रोग अच्छे होते हैं।

१९—सोंठ बारीक पीसकर रेंड़ी के तेल में मिलाकर गरम करें। सहने लायक रखकर लेप करें। सर्दी से उत्पन्न सिर का दर्द इससे अच्छा हो जायगा।

२०—काली मिर्च का चूर्ण लेकर उसमें गाय का शुद्ध घी मिला दें। इससे अधकपारी के विपरीत नाक में नस्य लेने से अधकपारी दूर होती है।

२१—लहसुन का गूदा बताशे के साथ पीसकर छानकर नस्य लेने से अधकपारी का नाश होता है।

नस्य लेने का नियम यह है कि, दायीं तरफ दर्द रहने पर बायीं नाक में और बायीं तरफ दर्द हो तो दायीं नाक में नस्य लेना चाहिये।

२२—हरीतकी जल में पीसकर लेप करने से अधकपारी रोग का नाश होता है।

२३—बकरी के दूध में हींग मिलाकर लेप करने से सिर दर्द दूर होता है।

२४—श्वेत चन्दन घिसकर लेप करने से सिर का दर्द दूर होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

२४—इलायची का तेल और इत्र लगाने से सिर का दर्द मिटता है।

२५—चन्दन का तेल मलने से पित्तजन्य सिरदर्द का शमन होता है।

२६—गुलाब जल में कपूर अथवा चन्दन मिलाकर मालिश करने से सिर की वेदना शान्त होती है।

२७—कफजन्य सिर पीड़ा में जायफल पीसकर लेप करना चाहिये।

२८—गुड़-चीनी एक में मिलाकर खाने से सिर वेदना की निवृत्ति होती है।

२९—गाय के विशुद्ध घी में दुगुनी मात्रा में चीनी मिलाकर सेवन करने से सिर का दर्द जाता रहता है।

नेत्र-रोग

१—कच्ची हलदी के रस से वस्त्र खण्ड भिगोकर उससे सदा आँखों को पोछते रहें। इससे आँखों की लाली दूर होती है।

२—गुलाब जल से आँखों को धोते रहने से आँखों का दर्द दूर होता है।

३—नीम की पत्ती और सोंठ एक साथ पीसकर उसमें जरा सेंधा नमक मिलाकर पिण्डवत् बना लें। उसी पिण्ड को आग में जरा गरम करके आँखों को सेंकते रहें। ऐसा करने से आठ दिनों ही में आँखों से आँसू गिरना और उसकी लालिमा दूर हो जाती है।

४—बिल्व पत्र का रस कॉंजी के साथ ताँबे के बर्तन में घिसकर उसमें सेंधानमक और सरसों का तेल मिलाकर आँखों में डालने से नेत्र स्राव दूर होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

५—पुराना घी (गाय का) आँख में डालने से बहुत प्रकार के नेत्र रोग दूर होते हैं।

६—आधी मिर्च रगड़कर सायंकाल आँखों में आँजन करने से रतौंधी दूर होती है।

७—साबुन का जल आँखों में छोड़ने से रतौंधी दूर होती है।

८—सन्ध्याकाल में पान का रस आँखों में छोड़कर थोड़ी देर बाद ठंढे जल से आँखों को धोने से रँतौंधी दूर होती है।

९—मधु के साथ त्रिकूट पीसकर आँजन करने से रँतौंधी दूर होती है।

१०—जीरे का शरबत पीने से गरमी की रँतौंधी का नाश होता है।

११—पीपल का चूर्ण और बिजौरे की मींगी का चूर्ण गाय के घी में मिलाकर सवा मास तक सेवन करने से आँखों की दृष्टिशक्ति तेज होती है।

१२—पान का डंठल दही से पीसकर उसे निचोड़ लें। उसी से आँखों में आँजन करें। इस उपचार से रँतौंधी दूर होती है।

१३—हरी दूब पीस कर आँखों पर लेप करने से आँख का दर्द मिटता है। कीचड़ आना बन्द हो जाता है।

१४—निर्मली के बीज पानी में घिस कर आँख में लगाने से दृष्टिशक्ति बढ़ती है।

१५—निर्मली के बीज मधु के साथ रगड़ कर लगाने से मोतिया का नाश होता है।

१६—कलमी शोरा और धूप में सुखाये नीम के फूलों का चूर्ण बारीक पीस कर आँखों में आँजन करने से फूली कटती है, जाला और धुंध भी मिट जाता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

१७—पीपल गोबर के रस में घिस कर आँजन करने से रँतौधीं दूर होतीं है।

१८—ढाई तोले की मात्रा में गुलाब जल लेकर उसमें दो रत्ती फिटकरी पीस कर आँखों में डालने से आँखों की लाली और कीचड़ का आना बन्द होता है।

१९—हरड़, आँवला और बहेड़ा तीनों समान मात्रा में लेकर एक कोरे बरतन में पानी भर कर उसमें भिगो दें। सारी रात छोड़ दें। प्रातः काल वही जल छान कर आँखों पर छींटें लगायें। इस उपचार से मोतियाबिन्द का नाश होता है।

२०—बबूल की पत्तियाँ घी में भून कर पुल्टिस बना आँख के चारो तरफ बाँधने से आँख का दर्द मिट जाता है।

२१—बहेड़े की मींगी का आँजन करने से मोतियाबिन्द का नाश होता है।

२२—हरड़ की छाल पीस कर आँजन करने से नेत्रों से पानी गिरना बन्द होता है।

२३—हलदी जल में पीस कर आँखों पर लेप करने से आँख की लालिमा और पीड़ा का शमन होता है।

२४—हींग मट्ठे या सिरके में पीस कर गरम करके लेप करने से आँखों की फुन्सी दूर होती है।

२५—मँजीठ जल में पीसकर आँजन करने से सब प्रकार के नेत्र दोष दूर होते हैं।

२६—गोला चूना कनपटी में लगने से, नेत्र पीड़ा और लालिमा दूर होतीं है।

२७—नेत्रों में गुलाब जल छोड़ने से नेत्र पीड़ा और लाली मिटती है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

२८—आँख के दर्द दूर करने के लिए प्याज का रस मधु मिलाकर आँजन करना चाहिये।

२९—भटकटैया के पत्तों को बारीक पीसकर टिकिया तैयार कर आँख पर पट्टी बाँधने से आँखों का दर्द दूर होता है।

३०—पीले फूल वाली काँटेदार भटकटैया का रस आँख में लगाने से धुंध मिट जाता है।

कानों के रोग

१—मालती की पत्तियों का रस या गोमूत्र कानों में डालने से, कान की सड़न आरोग्य होती है। पीव का बहना बन्द हो जाता है।

२—हरिताल गोमूत्र में रगड़ कर कानों में डालने से कान का लड़ना, पकना, पीव निकलना आदि सभी उपसर्ग अच्छे हो जाते हैं।

३—मँदार की पकी हुई पत्ती पर घी लगाकर दीपक की शिखा पर झुलस कर रस निचोड़ दें। वही रस पीड़ित कानों में डालें। यह कान के रोग का नाश करेगा।

४—बकरी का मूत्र गरम कान में डालने से तीव्र शूल, आवाज, मवाद और क्लेद नष्ट होते हैं।

५—अदरख, मधु, सेंधा नमक या तेल जरा गरम करके कानो में डालने से कर्ण रोगों का नाश होता है।

६—गोमूत्र जरा गरम करके कान में डालने से कर्ण शूल आराम होता है।

७—अदरख, हुरहुड़, सहिजन अथवा गूलर का रस, मधु तेल और सेंधा नमक के साथ कान में डालने से कर्ण शूल नष्ट होता है।

८—सहिंजन के दूध के साथ तिल तेल मिलाकर जरा गरम कर वेदना युक्त कान में डाल देने से कर्ण रोग आरोग्य होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

९—हींग, धनिया और सोंठ के साथ सरसों का तेल पकाकर कानों में छोड़ने से कर्ण शूल आराम होता है।

१०—शीतल जल और शुद्ध दूध समान मात्रा में लेकर उससे कान धोकर तिल का तेल कान में डालने से कान का घाव आरोग्य होता है।

११—शुद्ध सरसों का तेल गरम करके कान में डालने से कान में से आवाज निकलना बन्द हो जाता है।

१२—केवड़े का विशुद्ध इत्र कान में छोड़ने से बहरापन दूर होता है।

१३—कायफल तेल में पकाकर कान में डालने से कर्णरोगों का नाश होता है।

१४—काले धतूरे के पत्तों का रस लेप करने से कान की जड़ की सूजन अच्छी होती है।

१५—प्याज का रस कान में डालने से कान की वेदना शान्त होती है।

१६—भाँग की पत्तियों का रस कान में छोड़ने से कान की वेदना दूर होती है।

१७—मूली के बीज से पकाया हुआ तेल कान में छोड़ने से कानों की वेदना दूर होती है।

१८—लहसुन तिलतेल में जलाकर वही तेल कान में छोड़ने से बहरापन दूर होता है।

१९—पकाया तिल तैल कान में छोड़ने से कर्ण वेदना दूर होती है।

२०—नीबू के रस में समुद्रफेन मिलाकर कान में डालने से पीप बहना बन्द हो जाता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Sugamnigam Foundation, Chandigarh

मुख रोग

१—मधु मिश्रित मँदार का दूध मुख पर लेप करने से छोटी-छोटी फुन्सियाँ अच्छी हो जाती हैं।

२—कण्टकारी (भटकटैया) का काढ़ा पकाकर कुल्ला करने से मसूड़ों की वेदना और कीड़ियों का नाश होता है।

३—करौंदा की चटनी खाने से मसूड़ों का दर्द मिटता है।

४—कूट का चूर्ण दाँतों पर मलने से मसूड़ों की वेदना दूर होती है।

५—गूलर की छाल के काढ़े से कुल्ला करने से मसूड़ों की वेदना शान्त होती है।

६—चमेली की पत्तियों को औंटकर सहने योग्य हालत में बार-बार कुल्ला करने से मसूड़ों की वेदना शान्त होती है।

७—नीम की छाल का काढ़ा तैयार कर किंचित् गरम रहते ही कुल्ला करने से मसूड़ों की प्रबल वेदना शान्त होती है।

८—मसूर की दाल दूध में पीसकर लेप करने से चेहरे की झाई का नाश होता है।

९—मूंग का बेसन चेहरे पर मलने से मुख क्रान्ति की वृद्धि होती है।

१०—मँदार के दूध में किंचित् मधु मिलाकर मलने से मुख की छोटी-छोटी फुन्सियों का नाश होता है।

११—गेहूँ और जौ का चोकर जल में औंटकर उसी जल से कुल्ला करना मसूड़ों के दर्द को नष्ट करता है।

१२—हरीतकी के काढ़े में मधु मिलाकर कुल्ला करने से मुख रोग की निवृत्ति होती है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Arya Samaj Foundation, Chandigarh

१३—हल्दी के साथ तिल पीसकर लेप करने से चेहरे की झाइं कुछ ही दिनों में लुप्त हो जाती है।

दाँत के रोग

१—सरसों का तेल या शुद्ध घी फिटकिरी १ माशा, नागरमोथा २ माशा, नीम की छाल का कोयला १ तोला सबको एक में पीसकर मंजन तैयार करें। इस मजन से दाँत मलने से पायरिया रोग का नाश होता है।

मँदार की जड़ की दाँतून करने से दाँत की शिथिलता दूर होती है।

थूहर के दूध में रूई भिगोकर रखने से दाँत का घाव भर जाता है।

गोलमिर्च और तुलसी की पत्तियों को पीसकर गोली बनाकर दांत के नीचे दबा रखने से दाँत का दर्द दूर होता है।

इलायची, दालचीनी और तेजपात का चूर्ण बनाकर मंजन करने से दाँत का दर्द नष्ट होता है।

पुदीना के चूर्ण का मंजन करने से दाँत का दर्द दूर होता है।

सेंधा नमक के चूर्ण के साथ दुगुनी फिटकिरी का चूर्ण मिलाकर मंजन करने से दाँत का दर्द नष्ट होता है। जरा गरम करके उससे कुल्ली करें। इससे शिथिल दाँत दृढ़ होते हैं। दाँतों की जड़ में खोखला रहने से वह भी आरोग्य होता है।

२—बबूल की छाल आठ तोला कूटकर चार सेर जल में औट डालें। दो सेर शेष रहे तो उतार लें। इसी जल से कुल्ला करने से दाँत की शिथिलता दूर होती है।

३—पीपल का चूर्ण आधा तोला, गाय का शुद्ध घी आधा तोला मधु दो तोला, एक में मिलाकर मुँह में रखें, इससे दाँत शूल शीघ्र ही आरोग्य होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

४—१ तोला सेंधा नमक, गोल मिर्च एक तोला, पीपल की राख १ तोला, सोंठ १ तोला, बारीक पीसकर कपड़छान कर शुद्ध सरसों के तेल में मिला दें। इससे मंजन करें। इस उपचार से दाँत की वेदना दूर होती है।

५—कपास के बीज जल में औंटकर उसी जल से कुल्ला करने से दाँत का दर्द मिट जाता है।

६—तम्बाकू की राख दो भाग और गोलमिर्च का चूर्ण एक भाग मिलाकर मंजन करने से दाँत की पीड़ा शान्त होती है।

७—नीम की पत्तियों को पीसकर दाँतों के नीचे रखने से कीड़ियों का नाश होता है।

८—बड़ी इलायची जल में पीसकर या औंटकर कुल्ला करने से दाँत की वेदना दूर होती है।

९—हलदी के चूर्ण की पोटली बाँधकर दाँत के नीचे दवा रखने से वेदना शान्त होती है।

स्त्री-रोग

प्रदर—१ अरवा चावल के धोवन में चौराई की जड़ पीसकर उसमें शुद्ध मधु मिला दें। इसका सेवन करने से श्वेत रक्त प्रदर मिट जाते हैं।

२—सेमल का दूध बकरी के दूध में मिलाकर सेवन करने से प्रदर रोग का नाश होता है।

३—करैले की पत्तियों का काढ़ा पीने से रक्त प्रदर का उन्मूलन हो जाता है।

४—अशोक की छाल का काढ़ा तैयार कर उसमें गाय के शुद्ध दूध के साथ सेवन करने से प्रदर रोग का नाश होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

५—अँडूए की पत्ती का रस, गुरुच और नीम की छाल का रस एक में मिलाकर सेवन करने से श्वेत प्रदर का नाश होता है।

६—गूलर के फल का रस निचोड़ कर मधु मिलाकर सेवन करने से रक्त प्रदर का नाश होता है।

७—अरवा चावल के धोवन में कपास की जड़ मिलाकर नियम पूर्वक सेवन करने से श्वेत प्रदर का उन्मूलन होता है।

८—नागकेशर का चूर्ण मट्ठे के साथ सेवन करने से श्वेत प्रदर का नाश होता है।

९—दही भात खाने से प्रदर रोग में उपकार होता है।

१०—लाख का चूर्ण शुद्ध घी दही के साथ खाने से रक्त प्रदर का नाश होता है।

गर्भिणी रोग—१ आम की छाल और जामुन की छाल का काढ़ा पकाकर उसे ही लगावें पर प्रक्षेप देकर सेवनक रने से गर्भिणी का ग्रहणी रोग नष्ट होता है।

२—रेंड़ी की जड़, गुरुच, मँजीठ, लाल चन्दन, देवदारु, कमल की लकड़ी का काढ़ा सेवन करने से गर्भिणी का ज्वर दूर होता है।

योनिरोग—१ सुपारी का चूर्ण पोटली में बाँधकर गुह्यांग में रखने से योनि का स्राव रुक जाता है।

२—बैगन की जड़ का काढ़ा तैयार कर उससे योनि भाग को धोने से शिथिलता दूर होती है।

३—आँवला का रस मिश्री के साथ सेवन करने से योनि की ज्वाला शान्त होती है।

४—योनि की शिथिलता दूर करने के लिये केतकी और जूही का फूल मलना हितकर है।

६

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

५—पालकी के बीज पीसकर लेप करने से स्त्रियों की योनि की शिथिलता मिट जाती है।

गर्भरोग—१ गूलर का फल खाने से स्त्रियों को गर्भपात की आशंका नहीं रहती।

२—ऋतुकाल में एक तोला कायफल खाकर ऊपर से गाय का शुद्ध दूध सेवन करने से गर्भ स्थापना होती है।

३—मिश्री, खँभारी, मुलहठी का चूर्ण मधु के साथ सेवन करने से गर्भस्राव की आशंका मिट जाती है।

४—ककही की जड़ रविवार को उखाड़कर कुमारी कन्या के हाथ से कते सूत में लपेटकर स्त्री की कमर में बाँध रखने से गर्भपात का भय नहीं रहता।

५—गूलर की जड़ का काढ़ा सेवन करने से गर्भस्राव का भय मिट जाता है।

६—धतूरे की जड़ रविवार को उखाड़कर कमर में बाँध रखने से गर्भस्राव या गर्भपात रुक जाता है।

७—राई के चूर्ण में हींग भूनकर मिलाकर सेवन करने से पेट से मृत बच्चा बाहर निकल आता है।

८—ऋतुमती स्त्री सहदेवी की जड़ पीसकर सेवन करे तो गर्भधारण कर लेगी।

९—हींग भूनकर चूर्ण तैयार करें। शुद्ध गौ घृत के साथ गर्भवती को खिला दें। सुखपूर्वक प्रसव हो जायगा।

१०—आसक की जड़ पीसकर नाभि, वस्ति और योनि पर प्रलेप देने से सहज में प्रसव होता है।

११—घी और सेंधा नमक के साथ दशमूल का काढ़ा पीने से प्रसव में कष्ट नहीं होता।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

बाल-रोग

१—शिशु माता का दूध न पीता हो तो आँवला और हरड़ का चूर्ण घी और मधु के साथ मिलाकर जीभ पर लगा देने से वह स्तन का दूध पीने लगता है।

२—शिशु की नाभि में सूजन हो तो मिट्टी का एक पिण्ड गरम करके उसे दूध में भिगो दें। कुछ गरम रहते ही उससे नाभि पर सेंक दें। इससे नाभि की सूजन अच्छी होती है।

३—नागरमोथा, हरड़, नीम, परवल की पत्ती, मुलेठी का काढ़ा तैयार कर, कुछ गरम रहते ही शिशु को सेवन करायें। इससे शिशु का ज्वर दूर होता है।

४—हलदी, दारुहलदी, मुलेठी, भटकटैया और इन्द्रयव का काढ़ा सेवन करने से शिशु का ज्वर दूर होता है।

५—आम की गुठली का गूदा, लावा और सेंधा नमक एक साथ मधु के साथ सेवन करने से शिशु का वमन रुक जाता है।

५—(अ) चौकिया सोहागा अग्नि में तपाकर फुला लें। मधु के साथ मसूड़ों पर रगड़ें। बच्चों के दाँत आसानी से निकल आते हैं।

६—गुरुच का स्वरस पिलाने से बच्चों का ज्वर नष्ट होता है।

७—गोलमिर्च एक भाग, सोंठ दो भाग, कोरैया की छाल ४ भाग हल्का चूर्ण तैयार कर मट्ठा-गुड़ के साथ सेवन कराने से शिशु का ग्रहणी रोग नष्ट होता है।

८—सोंठ, अतीस, नागरमोथा, सुगंधवाला, इन्द्रयव इन सबका काढ़ा पकाकर सेवन कराने से शिशु का संग्रहणी रोग दूर होता है।

९—अनार का रस पिलाने से शिशु का वमन शान्त होता है।

१०—भटकटैया का फूल सेवन कराने से शिशु का बाल-श्वास रोग दूर होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

११—अतीस, पिप्पली, फणसा, पुष्करमूल का चूर्ण तैयार कर मधु के साथ शिशु को चटाने से श्वास-कास का उन्मूलन होता है।

१२—पठानीलोध, हलदी, मुलेठी और प्रियंगु के कल्क से तिल का तेल पकाकर लगाने से शिशु का नाभि पाक अच्छा होता है।

१३—गुरुच का सत ब्राह्मी के साथ सेवन कराने से शिशु का सूखा रोग मिटता है।

१४—पीपल और मधु चटाने से शिशु का रक्त दोष मिटता है।

कट जाना

१—धतूर की पत्ती पीस कर कटे स्थान पर प्रलेप देने से रक्त बन्द होता है।

२—अपामार्ग की जड़ पीसकर घाव पर लगाने से रक्त बहना रुक जाता है।

३—फिटकिरी पानी में घोलकर घाव को धोना चाहिए।

४—भंगरैया का रस लगाना हितकर है।

५—गेंदा की पत्ती का रस कटे स्थान पर लगाने से लाभ होता है।

जल जाना

१—धनियाँ, हरड़, जीरा, धूप एक साथ पीसकर घी में पकाइये। जले स्थान पर लगाइये। जलन-वेदना मिट जायेगी।

२—आलू का रस लगाने से जल जाने में लाभ होता है।

३—चूना का पानी लेकर उसमें कडू तेल मिला दें। उसमें कपड़ा भिगोकर जले स्थान पर रख दें, ऊपर रूई लपेट दें। फिर पानी और हवा से परहेज रखें। उपकारी उपचार है।

लू लगना

१—आम का पन्ना पीना चाहिए। पन्ना लेप करना चाहिए।

२—जौ का आटा शरीर में उबटन की भाँति लगाना चाहिए।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जूँ या लीख

१—मिट्टी का तेल सिर में लगाना चाहिये।

२—पारा नागरबेल की पत्तियों के रस में खरल कर लगाना चाहिए।

बाल पकना

चन्दन का काठ आध सेर, बरिंगरा का रस आधा सेर, बमरे का रस एक सेर, आँवला का रस एक सेर लौह चूर्ण १ तोला, काली तिल का तेल आध सेर इनको मन्द मन्द आँच पर पकाइये। फिर इसे लकड़ी के पेटी पर धूप में प्रतिदिन रख छोड़ें। ४० दिन तक धूप सेवन कराकर संचित कर रखें। श्वेत बालों को यह दवा काला बना देगी। लगातार कुछ काल लगाना पड़ेगा।

खुजली, दाद आदि

१—छोटी इलायची का दाना पीसकर मट्ठे में मिलाकर चन्दन की तरह बना दें। दाद के स्थान पर इसका प्रलेप देने से दाद नष्ट होती है।

२—हलदी, चकोड़ के बीज, लाख, सेंधा नमक, मंजीठ, गंधक सब समान भागों में लेकर मट्ठे में पीसना चाहिए। इसका लेप करने से खुजली का नाश होता है।

३—सारिक का सेवन लगातार करने से खुजली का नाश होता है।

४—अनन्तमूल का विधिवत् सेवन करने से खुजली, दाद आदि रोग नष्ट होते हैं।

बेवाई फटना

१—बकरी के दूध में धुंध पीसकर लगाने से बेवाई अच्छी हो जाती है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Arya Samaj Foundation, Chandigarh

२—कब्ज की शिकायत दूर करके रक्तशोधन की दवा सेवन करने से बेवाई कुछ दिनों में अच्छी हो जाती है।

३—नीम की छाल की राख, घी में पकाकर लगाना चाहिए। घी पानी में धुला रहना चाहिये।

हिक्का रोग

१—मुलहठी का चूर्ण मधु के साथ सेवन करने से हिक्का रोग नष्ट होता है।

२—जवाखार और पुष्कर मूल गरम जल के साथ पीने से हिचकी रोग नष्ट होता है।

३—पीपल का चूर्ण सेवन करने से हिक्का रोग में उपकार होता है।

४—इन्द्रायण का चूर्ण एक तोला लेकर मधु के साथ सेवन करने से हिक्का रोग का नाश होता है।

५—पीपल और बेर की मींगी सेवन करने से हिक्का रोग का नाश होता है।

६—पाकड़ के फल फूल का चूर्ण सेवन करने से हिचकी रोग का नाश होता है।

नपुंसकता

१—करेली के बीज पीस कर लिंग पर मालिश करें और ऊपर से रेंड़ की पत्ती बाँधें। इस उपचार से नपुंसकता दूर होती है।

२—भटकटैया की पत्तियों के रस में कनेल की जड़ अच्छी तरह खरल करके लिंग पर लेप करें। इससे नपुंसकता दूर होकर लिंग पुष्ट हो जायगा।

३—गोखरू का चूर्ण बकरी के दूध में मिलाकर सेवन करने से नपुंसकता नहीं रहती।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

४—सनाय का चूर्ण गाय के घी में मिलाकर खाने से नपुंसकता दूर होती है।

५—सुपारी बारीक पीस कर लिंग पर लेप करने से लिंग बलवान होता है।

६—रेंड़ी के बीज तेल में पकाकर रात्रि में सोते समय लिंग पर मालिश करने से लिंग की शिथिलता नष्ट होती है।

७—अल्प चीनी के साथ सेमफूल का रस आधा तोला मिलाकर प्रतिदिन सेवन करने से बल-वीर्य की वृद्धि होती है।

८—बकरे का एक मुष्क जल में पका लेने के बाद गाय के घी में भून डालिये। इसके बाद पीपल चूर्ण और सेंधा नमक के साथ सेवन करने से बल वीर्य की वृद्धि होती है।

९—आँवले के चूर्ण को आँवले के रस से सात बार भावना देकर दो रत्ती परिमाण में बटिकाएँ तैयार कर चीनी के साथ सेवन करने से वृद्ध पुरुष भी स्त्री-संसर्ग में थकावट अनुभव नहीं करता।

१०—मधु के साथ आँवले का चूर्ण सेवन करना बल-वीर्य की वृद्धि करता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

'मेडिकल पुस्तक भवन' की प्रकाशित चिकित्सा-संबंधी अभिनव पुस्तकें—

एलौपैथिक—

१ एलोपैथिक मेटेरिया मेडिका १२)
२ एलोपैथिक चिकित्सा (तृतीय-संस्करण) १०)
३ इंजेक्शन (पंचम संस्करण) १०)
४ एलोपैथिक पेटेण्ट मेडिसिन ३।)
५ मलेरिया एवं कालाजार चिकित्सा १।।।)
६ एलोपैथिक पाकेट गाइड ३)
७ एलोपैथिक सफल औषधियां ३।।)
८ मल, मूत्र रक्तादि परीक्षा ३)
९ सचित्र नेत्र रोग विज्ञान ८)
१० मिक्श्चर (पंचम-संस्करण) २।।)
११ ज्वर-चिकित्सा २)
१२ एलोपैथिक पेटेण्ट चिकित्सा १।।)
१३ अभिनव शवच्छेद विज्ञान १५)
१४ धात्री विज्ञान (Midwifery) २।।)

होमियोपैथिक—

१५ होमियो प्रिंस कम्परेटिव मेटेरिया मेडिका ६)
१६ होमियो पारिवारिक चिकित्सा ६)
१७ आर्गेनन ४
१८ बायोकेमिक चिकित्सा ४)
१९ होमियो गृह चिकित्सा २।।)
२० भेषजसार २।
२१ होमियो इंजेक्शन चिकित्सा १।।।)
२२ स्त्री-रोग चिकित्सा ४।।)
२३ होमियो मेटेरिया मेडिका ३।।।)
२४ भारतीय औषधावली एवं होमियो पेटेण्ट मेडिसिन्स १।।)
२५ होमियो पाकेट गाइड १)
२६ बायोकेमिक पाकेट गाइड १)
२७ होमियो थाइसिस चिकित्सा ।।।)
२८ होमियो न्युमोनिया चिकित्सा ।।।)
२९ होमियो टायफायड चिकित्सा ।।।)
३० रोग लक्षण संग्रह ≡)

आयुर्वेदिक—

३१ आयुर्वेद विज्ञान ३।।)
३२ आयुर्वेद घरेलू चिकित्सा १।।

जनोपयोगी पुस्तकें—

३३ रोगी की सेवा और पथ्य ३)
३४ थर्मामीटर ।)
३५ एनिमा कैथेटर ।=)
३६ नीम चिकित्सा विधान ।।=)
३७ तुलसी चिकित्सा विधान ।=)
३८ बबूल चिकित्सा विधान ।।=)
३९ मधु चिकित्सा विधान ।।)
४० वृक्षविज्ञान चिकित्सा २।)
४१ आरोग्य विज्ञान २)

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मेडिकल पुस्तक भवन

बनारस

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida